CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

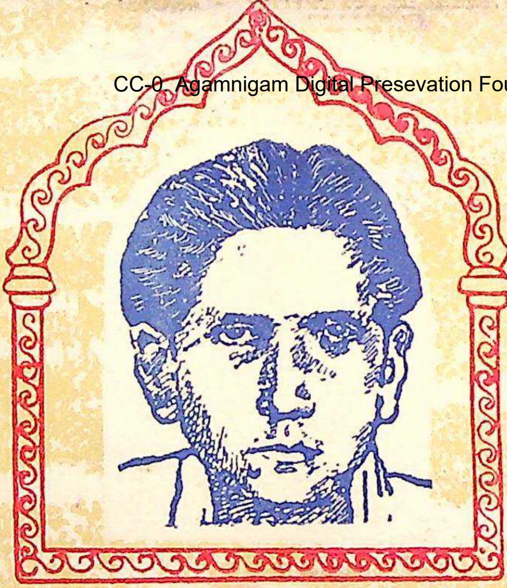

उर्दू के लोकप्रिय शायर

मजाज़

5782

जीवनी और संकलन

5782

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-६

5782

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

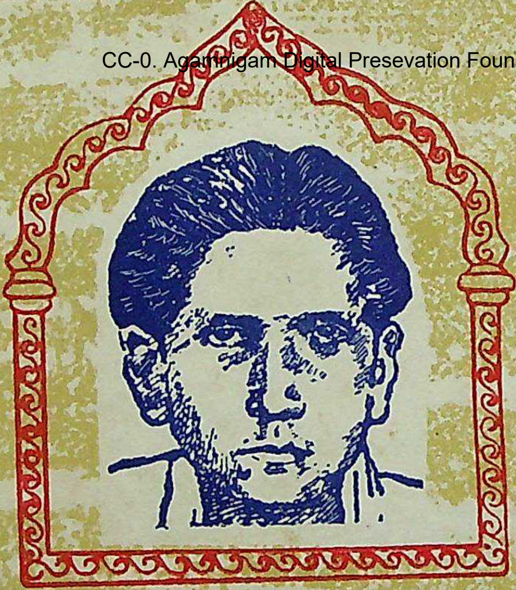

उर्दू के लोकप्रिय शायर

मजाज़

जीवनी और संकलन

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मजाज़

और उनकी शायरी

सम्पादक

प्रकाश पण्डित

इन्डियन बुक डिपो
(आदित्य भवन)
बी० एन० वर्मा रोड
लखनऊ — 226018

राजपाल

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कम. 57-82
State Museum, Library

मूल्य : दस रुपये (10.00)

संस्करण 1982, ©राजपाल एण्ड सन्ज़
MAJAZ (Poetry) Ed. by Prakash Pandit

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5782

सूची

1. जीवनी ... 7—24
2. चयन ... 27—100
नज़्में—
1. आवारा ... 27
2. एक ग़मगीन याद ... 30
3. आज ... 31
4. नूरा ... 33
5. अंधेरी रात का मुसाफ़िर ... 37
6. किससे मोहब्बत है ? ... 40
7. साक़ी ... 42
8. ख्वाबे-सहर ... 43
9. मजबूरियां ... 45
10. आज की रात ... 46
11. उनका जशने-सालगिरह ... 48
12. वतन आशोब ... 50
13. बोल ! अरी ओ धरती बोल ! ... 51
14. रात और रेल ... 53
15. शौक़े-गुरेज़ां ... 57
16. इधर भी आ ... 58
17. मेहमान ... 59
18. शह्रे-निगार ... 61

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

19. हुस्न-ओ-इश्क़	...	62
20. फ़िक्र	...	63
21. मुझे जाना है इक दिन	...	65
22. इश्तरे-तन्हाई	...	67
23. नौजवान ख़ातून से	...	69
24. दिल्ली से वापसी	...	70
25. एतिराफ़	...	72
26. नन्हीं पुजारिन	...	74
27. शिकवा-ए-मुख़्तसर	...	76
28. ग़ज़लें	...	77
30. कुछ चुने हुए शेर	...	95

सबका तो मुदावा कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके
सब के तो गरेबां सी डाले, अपना ही गरेबां भूल गए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीवनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

" 'मजाज़' उर्दू शायरी का कीट्स[1] है।"

" 'मजाज़' शराबी है।"

" 'मजाज़' बड़ा रसिक और चुटकुलेबाज़ है।"

" 'मजाज़' के नाम पर गर्ल्स कालिज अलीगढ़ में लाटरियां डाली जाती थीं कि 'मजाज़' किसके हिस्से में पड़ता है। उसकी कविताएं तकियों के नीचे छुपाकर आंसुओं से सींची जाती थीं और कुंवारियां अपने भावी बेटों का नाम उसके नाम पर रखने की क़समें खाती थीं।"

" 'मजाज़' के जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजिडी औरत है।"

'मजाज़' से मिलने से पूर्व मैं 'मजाज़' के बारे में तरह-तरह की बातें सुना और पढ़ा करता था और उसका रंगारंग चित्र मैंने उसकी रचनाओं में भी देखा था। विशेष रूप से उसकी नज़्म 'आवारा' में तो मैंने उसे साक्षात् रूप से देख लिया था। जगमगाती, जागती सड़कों पर आवारा फिरने वाला शायर! जिसे रात हंस-हंसकर एक ओर मैखाने और प्रेमिका के काशाने (घर) में चलने को कहती है तो दूसरी ओर सुनसान वीराने को। जो प्रेम की असफलता और संसार के तिरस्कार का शिकार है। जिसके दिल में बेकार जीवन की उदासी भी है और वातावरण की विषमताओं के विरुद्ध विद्रोह की प्रचंड ज्वाला भी। 'आवारा' में मैंने 'मजाज़' का पूरा व्यक्तित्व देख लिया; लेकिन इसके साथ ही इस बाग़ो-बहार व्यक्ति को समीप से देखने की मेरी इच्छा और भी प्रबल हो उठी।

यह इच्छा बहुत समय बाद 1948 ई० में पूरी हुई जब देश के बंट-वारे के बाद मैं लाहौर से दिल्ली में आ बसा था और मैंने और 'साहिर'

---

1. विश्व-विख्यात अंग्रेज रोमांटिक कवि

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लुधियानवी ने उर्दू की प्रसिद्ध पत्रिका 'शाहराह' की नींव डाली थी। 'मजाज़' से मेरी मुलाक़ात बड़े नाटकीय ढंग से हुई। रात के दस-ग्यारह का समय होगा। मैं और 'साहिर' नया मुहल्ला, पुल वंगश के एक मकान में घुसने की कोशिश कर रहे थे। मुहल्ला मुसलमानों का था और शहर का वातावरण मुसलमानों के खिलाफ़। अर्थात्, एक चीज़ मेरे खिलाफ़ थी और दूसरी 'साहिर' के। इसलिए हम चाहते थे कि बड़े यत्नों से हाथ आए उस मकान पर हमारे क़ब्ज़े की किसीको कानोंकान खबर न हो। 'साहिर' चुपके-चुपके सामान ढो रहा था और मैं मुहल्ले के बाहर सड़क के किनारे सामान की रखवाली कर रहा था कि एकाएक एक दुबला-पतला व्यक्ति अपने शरीर नामक हड्डियों के ढचर पर शेरवानी मढ़े बुरी तरह लड़खड़ाता और बड़बड़ाता मेरे सामने आ खड़ा हुआ।

"अख्तर शीरानी[1] मर गया—हाय 'अख्तर'! तू उर्दू का बहुत बड़ा शायर था—बहुत बड़ा।"

वह बार-बार यही वाक्य दोहरा रहा था। हाथों से शून्य में उल्टी-सीधी रेखाएं बना रहा था और साथ-साथ अपने मेज़बान को कोसने दे रहा था, जिसने घर में शराब होने पर भी उसे और शराब पीने को न दी थी और अपनी मोटर में बिठाकर रेलवे पुल के पास छोड़ दिया था। ज़ाहिर है कि इस ऊटपटांग-सी मुसीबत से मैं एक दम बौखला गया। मैं नहीं कह सकता कि उस समय उस व्यक्ति से मैं किस तरह पेश आता कि ठीक उसी समय कहीं से 'जोश' मलीहाबादी निकल आए और मुझे पहचानकर बोले, "इसे संभालो प्रकाश! यह 'मजाज़' है।"

'मजाज़' को संभालने की बजाय उस समय आवश्यकता यद्यपि अपने-आप को संभालने की थी लेकिन 'मजाज़' का नाम सुनते ही मैं एक-दम चौंक पड़ा और दूसरे ही क्षण सब कुछ भुलाते हुए मैं इस प्रकार उससे लिपट गया मानो वर्षों पुरानी मुलाक़ात हो।

---

1. उर्दू का एक प्रसिद्ध रामांटिक शायर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'मजाज़' से, जैसा कि प्रत्यक्ष है, उस समय मेरी वर्षों पुरानी मुलाक़ात न थी, लेकिन आज अट्ठाईस वर्ष बाद ये पंक्तियां लिखते समय मैं कह सकता हूं कि मैंने 'मजाज़' को हर रंग में देखा है। होश में, बेहोशी में। शराब के लिए भटकते हुए और शराब पीकर भटकते हुए। बड़ी मौन अवस्था में और बुरी तरह चहकते हुए। अपने जीवन की निराशाओं और विफलताओं पर दुखी होते हुए और अपने जीवन की निराशाओं और विफलताओं का मज़ाक़ उड़ाते हुए। सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते 'मजाज़' को मैंने खूब-खूब देखा है। उसकी शायरी और व्यक्तित्व पर लिखा गया लगभग हर शब्द पढ़ा है। उसके मित्रों और सगे-सम्बन्धियों से मिला हूं और दो-चार बार मुझे उसके आतिथ्य का सौभाग्य भी प्राप्त हो चुका है। यों अपने-आपको मैं उन लोगों में से समझता हूं जिन्हें 'मजाज़' और उसकी शायरी पर किंचित् विश्वास के साथ कुछ लिखने का अधिकार पहुंचता है।

'मजाज़' उन दिनों लगभग एक महीना हमारे साथ रहा। उसकी अंधाधुंध शराबनोशी के बारे में मैं पहले से सुन चुका था, और पहली मुलाक़ात में मुझे इसका तजुर्बा भी हो गया था, लेकिन इस एक महीने में मुझे अनुभव हुआ कि 'मजाज़' शराब को नहीं पीता, शराब बड़ी बेदर्दी से 'मजाज़' को पीती जा रही है। और यह अनुभव 1951-52 ई० में और भी उग्र हो उठा जब मेरे चांदनी चौक वाले मकान में 'मजाज़' लगातार कई महीने मेरे साथ रहा। इस बार 'मजाज़' को मैं उर्दू बाजार की एक पुस्तकों की दुकान पर से अर्धमृतावस्था में उठाकर लाया था और मैंने निश्चय किया था कि जहां तक संभव होगा उसे शराब नहीं पीने दूंगा। लेकिन अफ़सोस ! मेरे सभी प्रयत्न बेकार गए। खाट छोड़ते ही 'मजाज़' ने फिर से पीनी शुरू कर दी—इस बुरी तरह कि जीवन में तीसरी बार उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का आक्रमण हुआ। उन दिनों उसने दिल्ली में ऐसी खाक छानी, काम-वासना के ऐसे तमाशे दिखाए कि विश्वास न आता था कि यही वह 'मजाज़' है जो होश की हालत में किसी

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मामूली-से छिछोरेपन को भी गुनाह का दर्जा देता था। जिसे हर समय छोटे-बड़े का लिहाज़ रहता था और जो इतना शर्मीला-लजीला था कि स्त्रियों के सामने उसकी नज़रें तक न उठती थीं। उन दिनों 'मजाज़' को देखकर 'पथभ्रष्ट महानता' का ख़याल आता था। और शायद उसने ठीक ही कहा था कि :

मेरी बर्बादियों का हम-नशीनो
तुम्हें क्या, ख़ुद मुझे भी ग़म नहीं है[1]

यों तो 'मजाज़' को शुरू से रतजगे की बीमारी थी और इसी कारण घर के लोगों ने उसका नाम 'जग्गन' रख छोड़ा था, लेकिन उन दिनों शराब की तंद्रा के अतिरिक्त 'मजाज़' को बिल्कुल निद्रा न आती थी। अक्सर रात के डेढ़-दो बजे घर पहुंचता या पहुंचाया जाता। दरवाज़ा खोलने और उसे उसके कमरे में पहुंचाकर खाना खिलाने की मैंने नौकर को ताकीद कर रखी थी। लेकिन 'मजाज़' पर उस समय किसी से बातें करने का मूड सवार होता था; अतएव दरवाजा खुलते ही वह सीधा हमारे सोने के कमरे की ओर लपकता। सोने के कमरे का दरवाज़ा चूंकि भीतर से बन्द होता था, इसलिए वह बाहर ही से चिल्लाकर पुकारता, "हद है प्रकाश, अभी से सो गए !"

---

1. इसमें सन्देह नहीं कि 'मजाज़' के जीवन में जितनी कटुताएं थीं वह स्वयं ही उन सबका जन्मदाता था, लेकिन वह सदैव अपनी उन कटुताओं से खेला और उन्हीं से अपने लिए रस भी निचोड़ता रहा। आश्चर्य होता है कि ऐसा दुःख-भरा जीवन व्यतीत करने पर भी उसने कभी अपनी स्वाभाविक प्रफुल्लता और चुटकुलेबाज़ी को हाथ से न जाने दिया था।

एक बार बेतकल्लुफ़ मित्रों की एक महफ़िल में एक ऐसे मित्र आए जिनकी पत्नी का हाल ही में देहान्त हो गया था और वे बहुत ही उदास थे। सभी मित्र उन्हें धीरज धरने को कहने लगे। एक मित्र ने तजवीज रखी कि दूसरी शादी तो आप करेंगे ही। जल्दी क्यों नहीं कर लेते ताकि यह ग़म ग़लत हो जाए। उन महाशय ने बड़ी गंभीरता से कहा कि जी हां, शादी तो मैं ज़रूर करूंगा। लेकिन चाहता हूं कि किसी बेवा से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और यह पुकार सुबह चार-पांच बजे फिर सुनाई देती, "हद है प्रकाश, अभी तक सो रहे हो!"

शराबनोशी पर मेरी लगाई हुई पाबंदियों से छुटकारा पाने का 'मजाज़' ने यह तरीका ढूंढ़ निकाला था कि रात वह मेरे सोते में घर आता था और सुबह मेरे सोते में ही घर से निकल जाता था, और कभी-कभी तो कई-कई दिन तक सिवाय अफ़सोसनाक खबरों के उसका कुछ अता-पता न मिलता था। उसे जानने वाले और उसे चाहने वाले उससे कन्नी कतराते, लेकिन 'मजाज़' को इसका कुछ एहसास न

करूं। यह सुनना था कि 'मजाज़' ने बड़ी सहृदयता प्रकट करते हुए तुरन्त कहा, "भाई साहब, आप शादी कर लीजिए, वह बेचारी खुद ही बेवा हो जाएगी।"

अब कौन था जो इस भरपूर वाक्य से आनन्दित हुए बिना रह सकता। स्वयं वह मित्र भी खिलखिला पड़े।—और वह मित्र थे उर्दू के प्रसिद्ध शायर स्वर्गीय 'रविश' सिद्दीक़ी।

इसी प्रकार एक साहित्य-सभा में भाषण देते हुए जब सरदार जाफ़री ने 'इक़बाल' की शायरी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए उसे ध्वंसशील तथा प्रतिक्रिया-वादी कह दिया तो श्रोताओं में से 'इक़बाल' के किसी श्रद्धालु ने चिल्लाकर कहा, "अपनी यह बकवास बन्द कीजिए। आप की इस बकवास से 'इक़बाल' की रूह को सदमा पहुंच रहा है।"

सभा में शायद गड़बड़ हो जाती, लेकिन 'मजाज़' ने तुरन्त उठकर माइक्रोफ़ोन हाथ में लेते हुए कहा, "जनाब! सदमा तो आपकी रूह को पहुंच रहा है, जिसे आप ग़लती से 'इक़बाल' की रूह समझ रहे हैं।"

और यों पूरी सभा क़हक़हा लगा उठी।

यह तो खैर महफ़िलों और सभाओं की बातें हैं, 'मजाज़' रास्ता चलते हुए भी फुलझड़ियां छोड़ता जाता था। एक बार एक तांगे को रोककर तांगे वाले से बोला, "क्यों मियां कचहरी जाओगे?"

तांगे वाले ने सवारी मिलने की आशा से प्रसन्न होकर उत्तर दिया, "जाएंगे साब।"

"तो जाओ", 'मजाज़' ने कहा और अपने रास्ते पर हो लिया।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होता। कपड़े मैले हैं या फट गए, इसकी भी चिन्ता न थी। कितने दिन से अन्न नाम की कोई चीज़ पेट में नहीं गई, इस ओर ध्यान देने की शायद फ़ुर्सत ही न थी। यदि कोई धुन थी तो बस यही कि कहां से, कब और कितनी मात्रा में शराब मिल सकती है! दिन-रात निरन्तर शराब-नोशी का परिणाम नर्वस ब्रेकडाउन के सिवा और क्या हो सकता था, जो हुआ। किसी प्रकार पकड़-धकड़ कर रांची मैण्टल हस्पताल में पहुंचाया, लेकिन स्वस्थ होते ही यह सिलसिला फिर से शुरू हो गया; और यह सिलसिला 6 दिसम्बर, 1955 ई० को बलरामपुर हस्पताल, लखनऊ में उस समय समाप्त हुआ जब कुछ मित्रों के साथ 'मजाज़' ने नियमानुसार बुरी तरह शराब पी। मित्र तो अपने-अपने घरों को सिधार गए लेकिन 'मजाज़' रात-भर शराबखाने की खुली छत पर सर्दी में मदहोश पड़ा रहा और उसके दिमाग़ की नस फट गई।

हमारा देश चूंकि मृत-पूजक है इसलिए 'मजाज़' की मृत्यु पर अनगिनत लेख लिखे गए। शोक-सभाएं हुईं। पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक निकले और उन लोगों ने भी बड़ा शोक मनाया जो उसकी ज़बान से उसका कलाम और चलते हुए फ़िक़रे सुनने के लिए उसे शराब के रूप में ज़हर पिलाया करते थे। मुझे दिल्ली की ऐसी कई महफ़िलें याद हैं जहां उच्च वर्ग की सुन्दर तथा भद्र महिलाओं का झुरमुट होता था; जहां 'मजाज़' को ताबड़तोड़ पैग पेश किए जाते थे और उससे ताबड़तोड़ नज़्में और ग़ज़लें सुनी जाती थीं। लेकिन जब मेज़बान देखते कि 'मजाज़' का सांस फूल गया है, अब उससे और कुछ न सुनाया जाएगा, या वह अपने आपे में नहीं रहा तो वे उसे अपने ड्राइवर के हवाले कर देते थे कि उसे उसके निवास-स्थान पर छोड़ आए; या अगर यह प्रबंध नहीं होता था तो अपने बंगले के किसी सर्वेंट क्वार्टर में बन्द करके बाहर से ताला डाल देते थे।

'मजाज़' की ऐसी शराबनोशी के लिए मैं 'मजाज़' को निर्दोष नहीं समझता, लेकिन उसकी ऐसी दयनीय मृत्यु के सम्बन्ध में मैं उन कृपालुओं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को बराबर का दोषी समझता हूं जिन्होंने 'मजाज़' की ज़िन्दगी के हालात से वाक़िफ़ होते हुए भी उसे पकड़-पकड़कर शराब पिलाई।

'मजाज़' की ज़िन्दगी के हालात बड़े दुःखद थे। कभी पूरी अलीगढ़ यूनिवर्सिटी, जहां से उसने बी० ए० किया था, उस पर जान देती थी। गर्ल्स कालिज में हर ज़बान पर उसका नाम था। उसकी आंखें कितनी सुन्दर हैं! उसका क़द कितना अच्छा है! वह क्या करता है? कहां रहता है? किसी से प्रेम तो नहीं करता—ये लड़कियों के प्रिय विषय थे और वे अपने क़हक़हों, चूड़ियों की खनखनाहटों और उड़ते हुए दुपट्टों की लहरियों में उसके शे'र गुनगुनाया करती थीं। लेकिन लड़कियों का वही चहेता शायर जब 1936 ई० में रेडियो की ओर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'आवाज़' का सम्पादक बनकर दिल्ली आया तो एक लड़की के ही कारण उसने दिल पर ऐसा घाव खाया जो जीवन-भर अच्छा न हो सका। एक वर्ष बाद ही नौकरी छोड़कर जब वह अपने शहर लखनऊ को लौटा तो उसके सम्बन्धियों के कथनानुसार वह प्रेम की ज्वाला में बुरी तरह फुंक रहा था और उसने बेतहाशा पीनी शुरू कर दी थी। इसी सिलसिले में 1940 ई० में उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का पहला आक्रमण हुआ और यह रट लगी कि फ़लां लड़की मुझसे शादी करना चाहती है लेकिन रक़ीब (प्रतिद्वन्द्वी) ज़हर देने की फ़िक्र में हैं। यहां यह बताना बेमौक़ा न होगा कि 'मजाज़' ने दिल्ली के एक उच्च घराने की अत्यन्त सुन्दर और इकलौती लड़की से प्रेम किया था, लेकिन उसके विवाहिता होने के कारण यह बेल मंढ़े न चढ़ सकी और उसने यह कहते हुए दिल्ली से विदा ली थी कि :

रुख़सत ऐ दिल्ली! तेरी महफ़िल से अब जाता हूं मैं
नौहागर[1] जाता हूं मैं, नाला-ब-लब[2] जाता हूं मैं

उपचार-चिकित्सा से मानसिक दशा सुधरी तो माता-पिता ने हृदय

---

1. विलाप करते हुए 2. होंठों पर आर्तनाद लिए हुए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के घाव का इलाज करना चाहा। लड़की! कोई-सी लड़की जो उसके जीवन का सहारा बन सके, जो उसके रिसते हुए नासूर पर मरहम रख सके! लेकिन वही लोग, जिन्हें कभी 'मजाज़' को अपना दामाद बनाने की बड़ी अभिलाषाएं थीं, अवगुण गिनवाने लगे; और लड़कियों को तो जैसे अव 'मजाज़' से भय आने लगा था।

'मजाज़' ने सामान्य जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया। कुछ दिनों तक 'बम्बई इन्फ़र्मेशन' में काम करता रहा। वहां से लौटा तो लखनऊ विश्वविद्यालय में एल-एल० बी० में दाखिला ले लिया। उन्हीं दिनों 'सिब्तेसहन' और 'सरदार जाफ़री' के साथ 'नया अदब' नाम से एक प्रगतिशील पत्रिका निकाली और फिर हार्डिंग लायब्रेरी, दिल्ली में असि-स्टेंट लायब्रेरियन की हैसियत से काम करने लगा। लेकिन उसी जमाने में, उसकी छोटी बहिन 'हमीदा सालिम' के कथनानुसार चोट पर एक और चोट पड़ी। घर वालों ने किसी प्रकार एक नाता तै किया और 'मजाज़' ने शायद आत्म-समर्पण में सुख अथवा मुक्ति पाने के विचार से हामी भी भर दी, लेकिन जब वर-दिखव्वे के तौर पर वह अपने ससुर की सेवा में उपस्थित हुआ तो हज़ारों रुपया मासिक कमाने वाले सरकारी पदाधिकारी को डेढ़ सौ रुपल्ली मासिक पाने वाले असिस्टेंट लायब्रेरियन में कोई आकर्षण नज़र न आया।

यहां एक बार फिर धन की जीत और कला की हार हुई। शायर ने एक बार दिल की आवाज़ पर क़दम उठाए थे और मुंह के बल गिरा था। अब के अक़्ल पर भरोसा किया था, फूंक-फूंककर क़दम रखा था, लेकिन फिर ठोकर खा गया और खिसिया कर रो पड़ा और 1954 ई० में उस पर पागलपन का दूसरा हमला हुआ।

अब वह स्वयं ही अपनी महानता के राग अलापता था। शायरों के नामों की सूची तैयार करता था और 'ग़ालिब' और 'इक़बाल' के नाम के बाद अपना नाम लिखकर सूची समाप्त कर देता था। डाक्टरों के भर-सक प्रयत्नों तथा घर वालों की जानतोड़ सेवा-शुश्रूषा से किसी प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वास्थ्य लाभ हो गया पर जीवन का ढर्रा न बदल सका। निरन्तर बेकारी और एकाकीपन का साथ रहा। शराबनोशी बढ़ती गई। जीवन की कटुताएं बढ़ती गईं और वह उन कटुताओं को शराब में डुबोने का असफल प्रयत्न करते-करते स्वयं ही शराब में डूब गया।

आधुनिक उर्दू शायरी का यह प्रिय और दयनीय शायर सन् 1909 ई० में अवध के एक प्रसिद्ध क़सबे रदौली में पैदा हुआ। पिता सिराजुल-हक़ रदौली के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ज़मींदार होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त की और ज़मींदारी पर सरकारी नौकरी को प्राथमिकता दी। यों असरारुल हक़ (मजाज़) का पालन-पोषण उस उभरते हुए घराने में हुआ जो एक ओर जीवन के पुराने मूल्यों को छाती से लगाए हुए था और दूसरी ओर नए मूल्यों को भी अपना रहा था[1]। बचपन में, जैसाकि उसकी बहन 'हमीदा' ने एक जगह लिखा है, 'मजाज़' बड़े सरल स्वभाव तथा विमल हृदय का व्यक्ति था। जागीरी वातावरण में स्वामित्व की भावना बच्चे को मां के दूध के साथ मिलती है लेकिन वह हमेशा निर्लिप्त तथा निःस्वार्थ रहा। दूसरों की चीज़ को अपने प्रयोग में लाना और अपनी चीज़ दूसरों को दे देना उसकी आदत रही। इसके अतिरिक्त वह शुरू से ही सौन्दर्य-प्रिय भी था। कुटुम्ब में कोई सुन्दर स्त्री देख लेता तो घंटों उसके पास बैठा रहता। खेल-कूद, खाने-पीने, किसी चीज़ की सुध न रहती। प्रारम्भिक शिक्षा लखनऊ के अमीनाबाद हाई स्कूल में प्राप्त कर जब वह आगरा के सेंट जोन्स कालिज में दाखिल हुआ तो कालिज में मुईन अहसन 'जज़्बी' और पड़ोस में 'फ़ानी' ऐसे शायरों की संगत मिली और यहीं से 'मजाज़' की उस ज्योतिर्मय शायरी का प्रादुर्भाव हुआ जिसकी चमक आगरा, अलीगढ़ और दिल्ली से होती हुई समस्त भारत में फैल गई।

'मजाज़' की शायरी का आरंभ बिल्कुल परम्परागत ढंग से हुआ

1. इस विशेषता की झलक 'मजाज़' के व्यक्तित्व में भी थी और शायरी में भी। उसका पूरा कलाम 'पुरानी बोतलों में नई शराब' का साक्षी है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और उसने उर्दू शायरी के मिज़ाज का सदैव ख़याल रखा। ऊपर मैं कह चुका हूं कि 'मजाज़' को 'अख़्तर' शीरानी की मृत्यु का बड़ा शोक था और मदहोशी की हालत में भी वह उसे उर्दू का बहुत बड़ा शायर कह रहा था। वास्तविकता यह है कि 'अख़्तर' शीरानी और 'मजाज़' की शायरी की पृष्ठभूमि एक-सी है। मूल रूप से दोनों रोमांटिक और संगीत-धर्मी शायर हैं। वहां भी बेकार जीवन की खिन्नता है और यहां भी। वहां भी शराब है और यहां भी। वहां भी कोई-न-कोई 'सलमा' या 'अज़रा' है और यहां भी कोई 'ज़ोहरा-जबीं'। वहां भी 'ग़ालिब', 'मोमिन', 'हाफ़िज़' और 'ख़य्याम' के स्वरों की गूंज है और यहां भी। लेकिन आगे चलकर जो चीज़ 'मजाज़' को 'अख़्तर' शीरानी से अलग करती है, वह है 'मजाज़' का सुलझा हुआ बोध या विवेक। ख़ालिस इश्क़िया शायरी करते हुए भी वह अपने जीवन तथा जन-साधारण के जीवन के प्रभावों तथा प्रकृतियों को विस्मृत नहीं करता। हुस्नो-इश्क़ का एक अलग संसार बसाने की बजाय वह हुस्नो-इश्क़ पर लगे सामाजिक प्रतिबन्धों के प्रति अपना रोष प्रकट करता है। आसमानी हूरों की ओर देखने की बजाय उसकी नज़र रास्ते के गंदे लेकिन हृदयाकर्षक सौन्दर्य पर पड़ती है और इन दृश्यों के प्रेक्षण के बाद वह जन-साधारण की तरह जीवन के दुःख-दर्द के बारे में सोचता है और फिर कलात्मक निखार के साथ जो शे'र कहता है तो उसमें केवल किसी 'ज़ोहरा-जबीं' से प्रेम ही नहीं होता, विद्रोह की झलक भी होती है। यह विद्रोह कभी वह वर्तमान जीवन-व्यवस्था से करता है, कभी साम्राज्य से; और जीवन की वंचनाओं के वशीभूत कभी-कभी इतना कटु हो जाता है कि अपनी ज़ोहराजबीनों के रंगमहलों तक को छिन्न-भिन्न कर देना चाहता है।

शायद इसीलिए 'मजाज़' की शायरी का विवेचन करते हुए उर्दू के प्रसिद्ध शायर स्वर्गीय 'असर' लखनवी ने एक बार लिखा था कि "उर्दू में एक कीट्स पैदा हुआ था लेकिन इन्क़िलाबी भेड़िये उसे उठा ले गए।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'मजाज़' को इन्क़िलाबी भेड़िये (प्रगतिशील लेखक) उठा ले गए या वह स्वयं मिमियाती हुई भेड़ों के रेवड़ से निकल आया, इस बहस की यहां गुंजाइश नहीं है। लेकिन इस वास्तविकता से उर्दू साहित्य का कोई पाठक इन्कार नहीं कर सकता कि 'मजाज़' ने जिस दृष्टि से व्यक्तिगत दुःखों को सामाजिक पृष्ठभूमि में देखा और जांचा और यथार्थ और रोमांस का संगम तलाश किया, और उसके यहां रस और चिन्तन का जो सुन्दर समन्वय मिलता है, वह उसकी कवित्व-शक्ति के अतिरिक्त इस बात का भी द्योतक है कि कोई साहित्यकार केवल शून्य में जीवन व्यतीत नहीं कर सकता और न ही अपनी कल्पना के पंखों पर उड़कर अधिक देर तक किसी कृत्रिम स्वर्ग में जीवित रह सकता है।

1935 ई० में जबकि 'मजाज़' को शे'र कहते अभी केवल पांच वर्ष हुए थे और भारत में अभी 'प्रगतिशील लेखक संघ' की नींव भी नहीं पड़ी थी, 'मजाज़' ने इन शब्दों में अपना परिचय दिया था :

खूब पहचान लो 'असरार' हूं मैं
जिन्से-उल्फ़त का[1] तलबगार हूं मैं
ख़्वाबे-इश्रत में[2] हैं अरबाबे-ख़िरद[3]
और इक शायरे-बेदार[4] हूं मैं
ऐब जो हाफ़िज़-ओ-ख़य्याम में था
हां कुछ उसका भी गुनहगार हूं मैं
हूरो-ग़िल्मां का यहां ज़िक्र नहीं
नौए-इन्सां का[5] परस्तार[6] हूं मैं

'हाफ़िज़' और 'ख़य्याम' के ऐब का वह बेशक गुनहगार था, लेकिन नौए-इन्सां की उपासना की यही भावना हर अवसर पर उसकी सहायता करती रही। और यह कोई साधारण बात नहीं है कि अपनी मस्ती

---

1. प्रेम नामक वस्तु का 2. ऐश्वर्य की नींद में 3. बुद्धिमान 4. जागरूक कवि 5. मनुष्य-मात्र का 6. उपासक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और शराब-परस्ती के बावजूद और मौलिक रूप से रोमांटिक शायर होते हुए भी, अगर हर क़दम पर नहीं तो हर मोड़ पर, वह अवश्य जीवन की प्रगतिशील शक्तियों का साथ देता रहा। मेरे इस दावे की दृढ़ता के लिए 'मजाज़' के निम्नलिखित शे'र देखिए जिन्हें मैं क्रमानुसार प्रस्तुत कर रहा हूं :

हदें वो खेंच रक्खी हैं हरम के पासबानों ने
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम भी पहुंचा नहीं सकता
(1936)

जवानी की अंधेरी रात है, ज़ुल्मत का[1] तूफ़ां है
मेरी राहों में नूरे-माहो-अंजुम[2] तक गुरेज़ां हैं
ख़ुदा सोया हुआ है अहरमन[3] महशर-बदामां[4] है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।
(1937)

ज़ेह्‌ने-इन्सानी[5] ने अब औहाम की[6] ज़ुल्मात में
ज़िन्दगी की सख्त, तूफ़ानी अंधेरी रात में
कुछ नहीं तो कम से कम ख्वाबे-सहर[7] देखा तो है
जिस तरफ़ देखा न था अब उस तरफ़ देखा तो है
(1939)

बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवांडोल
(1945)

ये इन्क़िलाब का मुज़्दा[8] है इन्क़िलाब नहीं
ये आफ़ताब का[9] पारतौ[10] है आफ़ताब नहीं
(1945)

---

1 अंधकार का 2. चांद सूरज का प्रकाश 3. शैतान 4. प्रलय-मचाए हुए 5. मानव-मस्तिष्क 6. भ्रमों की 7. सुबह होने का सपना 8. शुभ समाचार 9. सूरज का 10 प्रतिबिम्ब

सब्ज़ा-ओ-बर्गो-लाला-ओ-सर्वो-समन को क्या हुआ
सारा चमन उदास है हाए चमन को क्या हुआ
कोई बताए अज़मते-ख़ाके-वतन को[1] क्या हुआ
कोई बताए ग़ैरते-अहले-वतन को क्या हुआ

(1950)

इन शेरों में हमें जन-चेतना, स्वतंत्रता-आन्दोलन, स्वतंत्रता और उसकी प्रतिक्रिया, सामाजिक क्रांति में कलाकारों की ज़िम्मेदारी इत्यादि की बहुत-सी झलकियां मिलती हैं। 'झलकियां' मैं इसलिए कह रहा हूं क्योंकि 'मजाज़' चाहे कितना ही बड़ा और कैसा ही सामयिक विषय क्यों न प्रस्तुत कर रहा हो, कला के तक़ाज़ों को कभी हाथ से नहीं जाने देता। और चूंकि उसका दृष्टिकोण रोमांटिक है और उसने क्लासिकी शायरी से मुंह मोड़ने और नए प्रयोगों का खतरा मोल लेने की बजाय पुरानी उपमाओं, परिभाषाओं तथा शब्दों को नए अर्थ पहनाए हैं इसलिए कुछेक स्थानों को छोड़कर, जहां सामाजिक त्रुटियों के कटु अनुभव से वह कुछ भावुक तथा ध्वंसकारी हो गया है, सामूहिक रूप से वह सामाजिक परिवर्तन या क्रांति के लिए गरजता नहीं, गाता है। और मेरे समीप यही उसकी शायरी की सबसे बड़ी विशेषता है।

'मजाज़' के कविता-संग्रह 'आहंग' की भूमिका में उर्दू के प्रसिद्ध शायर फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' ने उसे क्रान्ति के ढिंढोरची की बजाय क्रान्ति के गायक की उपाधि देते हुए बिल्कुल ठीक लिखा है कि :—

'मजाज़' की इन्क़िलाबियत, आम इन्क़िलाबी शायरों से मुख्तलिफ़ है। आम इन्क़िलाबी शायर इन्क़िलाब के मुतअल्लिक़ गरजते हैं, ललकारते हैं, सीना कूटते हैं, इन्क़िलाब के मुतअल्लिक़ गा नहीं सकते···वो सिर्फ़ इन्क़िलाब की हौलनाकी (भीषणता) को देखते हैं, उसके हुस्न को नहीं पहचानते। यह इन्क़िलाब का तरक़्क़ी-पसंद (प्रगतिशील) नहीं, रजअत-

1. देश की मिट्टी की महानता को 2. देशवासियों की ग़ैरत को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पसंद (प्रतिक्रियात्मक) तसव्वुर (उद्भावना) है।

" 'मजाज़' उर्दू शायरी का कीट्स था।"
" 'मजाज़' वास्तविक अर्थों में प्रगतिशील शायर था।"
" 'मजाज़' रस और मद्य का शायर था।"
" 'मजाज़' अच्छा शायर और घटिया शराबी था।"
" 'मजाज़' नीम-पागल लेकिन निष्कपट व्यक्ति था।"
" 'मजाज़' चुटकुलेबाज़ था।"

'मजाज़' को पढ़ने वाले, 'मजाज़' से मिलने वाले, 'मजाज़' को जानने वाले घूम-फिरकर मतों के इन्हीं बिन्दुओं पर पहुंचते हैं, लेकिन ये सब बिन्दु मिलकर एक ऐसे दिव्य केन्द्र पर आ मिलते हैं जहां 'मजाज़' और केवल 'मजाज़' अंकित है।

'मजाज़' की असामयिक मृत्यु पर उर्दू के कुछ समकालीन साहित्यकारों के मनोभाव

"......वह एक बाण की तरह छूटा और फ़िज़ा की[1] बुलंदियों में फूल-सी जगमगाती हुई चिंगारियां बिखेर कर चश्मे-ज़दन में[2] बुझ गया; लेकिन ये चिंगारियां उसके मुख्तसर मजमूआ-ए-कलाम[3] में हमेशा के लिए महफ़ूज़[4] हो गई हैं। उनकी जगमगाहटें ज़िंदगी की रातों को रौशन[5] करती रहेंगी। 'मजाज़' की मौत पर ये बातें लिखकर ऐसा महसूस कर

1. वायुमंडल की 2. पलक झपकने में 3. कविता-संग्रह 4. सुरक्षित
5. प्रकाशमान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहा हूं कि मैंने बेअदबी की है। शायद मौत का एहतिराम[1] खामोश रह-कर ही किया जा सकता है।"

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

o o o

"……आज हम उस महबूब[2] शायर की मौत पर जब आंसू गिरा रहे हैं तो उसकी नज़्मों, ग़ज़लों के साथ-साथ उसकी नाकामियां और नामुरादियां, सब सामने आ रही हैं। दूसरी तरफ़ दोस्तों और दोस्तनुमा दुश्मनों के पर्रे[3] गुज़र रहे हैं। जीने और तरक़्क़ी करने के जो शरायत[4] ज़माने ने बना रखे हैं, वो सामने आ रहे हैं और दिल में इक हूक उठती है कि काश! जिस तरह हुआ, उस तरह न होता। काश! दुनिया इससे बेहतर होती। काश! वह ऐसी होती कि 'मजाज़' उसमें जी सकता। जी सकता और हंस सकता और नग़मे गा सकता। हमको यक़ीन है कि उसका हर नग़मा इन्सानी आरज़ुओं और हौसलों का एलबम होता।"

—हयातुल्ला अनसारी

o o o

"……मेरी उम्र इसी में गुज़री है और मुझे इसके बहुत मौक़े मिले हैं कि मैं इन्सान को, वह शायर हो कि ग़ैर-शायर[5], परखूं और मैं यह बराबर करता रहा हूं और मुझे यह कहने में कोई ताम्मुल[6] नहीं कि 'मजाज़' से ज़ियादा हलीम[7] और शरीफ़ हस्ती उसकी नस्ल में मुझे कोई नहीं मिली। 'मजाज़' की मौत एक बहुत बड़े शायर और एक निहायत मासूम हस्ती की मौत है।"

—'मजनूं' गोरखपुरी

o o o

"……और उसने जवां-मर्गी[8] की रीत पूरी कर दी। जवां-मर्गी और शायरी की रीत जिसे उर्फ़ी, शैले, कीट्स, बायरन, चेस्टरटन, कॉडवेल,

1. सम्मान 2. प्रिय 3. झुंड 4. शर्तें 5. जो शायर न हो 6. झिझक 7. विनम्र 8. जवानी की मौत

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़ॉक्स ने भी पूरा किया था'''मजाज़' उसी रास्ते पर चले गए जिस पर उर्दू शायरों और अदीबों में मीर अब्दुलहई 'ताबां', दुर्गासहाय 'सरवर' पण्डित रत्ननाथ 'सरशार', बनवारी लाल 'शो'ला', 'अख़्तर' शीरानी, सआदत हसन मन्टो गए थे। ऐ उर्दू के अज़ीमुश्शान शायर! अपने दोस्तों और क़द्रदानों का सलाम ले। मौत तेरी घात में थी, तुझे ले गई। लेकिन ज़िन्दगी भी मौत से इन्तिक़ाम लेना जानती है। वह तुझे मरने न देगी। वह तेरी शायरी को बक़ाए-दवाम[1] बख़्शेगी। तेरा जिस्म मिट्टी का था, मिट्टी में मिल गया, तेरे नग़्मे इन्सानों की मलकियत हैं। जब तक इन्सानों के दिल धड़कते हैं तेरे नग़्मे उन्हें इज़्तिराव[2] की दौलत से माला-माल करते रहेंगे और तू ज़िन्दा रहेगा।"

—एहतिशाम हुसैन

° ° °

"तुम अब हमारे दर्मियान नहीं रहे हो 'मजाज़'! और न जाने इस बस्ती को तजकर कहां चले गए हो—! अब तुम कहीं नज़र नहीं आओगे, कभी तुम्हारी मोहनी सूरत दिखाई नहीं देगी।

तुम्हारी नावक़्त मौत एक ऐसा हादिसा है कि इसे अज़ीम-तरीन[3] हादिसा भी नहीं जा सकता। इसलिए कि ये हादिसा अज़ीम-तरीन हवादिस से[4] भी कहीं ज़ियादा रूह-फ़र्सा[5] है।

तुम्हारी मौत ने मेरे दिल की जो कैफ़ियत कर दी है, उसी कैफ़ियत को जब अल्फाज़ की[6] पुश्त पर[7] रखना चाहता हूं तो वो हुबाब की[8] तरह मअ़न[9] टूट जाते हैं।

हैफ़[10] उन तास्सुरात पर[11] जो फ़ुक़दाने-अल्फ़ाज़ की[12] बिना पर[13] सर पीटते और गरजते रहते हैं।

मौत हम सबका तआक़ुब[14] कर रही है, मगर ये देखकर रश्क[15]

1. अमरत्व 2. व्याकुलता 3. महानतम 4. दुर्घटनाओं से 5. जान-लेवा 6. शब्दों की 7. पीठ पर 8. पानी के बुलबुले की 9. तुरन्त 10. अफ़सोस 11. अनुभूतियों पर 12. शब्दों के अभाव की 13. कारण 14. पीछा 15. ईर्ष्या

आया और कलेजा फट गया कि वो तुम तक किस क़दर जल्द पहुंच गई।

एक मुद्दत से शिकायत कर रहा हूं कि ओ कम्बख़्त मौत! तू मुझे क्यों नहीं पूछती। मैंने क्या बिगाड़ा था तेरा कि तूने मुझसे बे-एतिनाई[1] बरती, और 'मजाज़' ने क्या एहसान किया था तुझ पर, ओ रूसियाह[2]! कि तूने उसे बढ़कर कलेजे से लगा लिया।

'मजाज़'! मैंने तेरे वाल्दैन को तेरा पुर्सा[3] नहीं दिया था। इसलिए कि उन्हें चाहिए था कि वह तेरा पुर्सा मुझे दे देते। तू उनका सिर्फ़ बेटा था, लेकिन तू मेरा क्या था, यह उन बदनसीबों को मालूम नहीं।

मेरा ख़याल था कि यह चिराग़ जो मुझ नामुराद ने जलाया है, मेरे बाद तू इस चिराग़ को रौशन करेगा और मज़ीद[4] रोग़न[5] डालकर इसकी लौ को उकसाएगा, और इस चिराग़ से सैकड़ों नए चिराग़ जलते चले जाएंगे। लेकिन सद-हैफ़[6]! कि तू ही बुझकर रह गया—मेरी उमीद का चिराग़ शायद अब कभी न जल सकेगा।

यह सच है कि यह भेड़ियों की दुनिया इस क़ाबिल नहीं कि शायर यहां जिन्दगी बसर करे। ये सूदो-ज़ियां[7] के घुप अंधेरे में एक-दूसरे से टकराने, एक-दूसरे का ख़ून पीने और एक-दूसरे का गोश्त खाने वाले दरिन्दे इस क़ाबिल नहीं कि इनकी लाशों से अटी हुई ज़मीन पर शायर चले और फिरे और इस मनहूसो-नापाक सियासी अस्तबल में शायर क़दम रखे जहां गधों की गर्दनों में ज़र्रीं[8] तौक़[9] जगमगा रहे हैं। और यही एक ऐसी बात है जिस पर निगाह करके मैं, ऐ 'मजाज़'! तुझे मुबारकबाद देता हूं कि तू इस दुनिया से चला गया और ऐन[10] जवानी के मौसमे-बहार मेंचला गया।

लेकिन तेरी यह जवां-मर्गी[11] और जवां-बख़्ती[12] मेरे वास्ते एक ऐसा शो'ला-ए-ग़म[13] छोड़ गई है जो मेरे सीने के अन्दर उस वक़्त तक जलता

1. उपेक्षा 2. काले मुंह वाली 3. मातमपुरसी का पत्र 4. और 5. तेल 6. सौ बार अफ़सोस 7. लाभ और हानि, 8. सुनहरी 9. हंसलियां 10. ठीक 11. जवानी की मौत 12. सौभाग्य 13. ग़म का शोला

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहेगा जब तक कि सांस चलती रहेगी।

एक तेरे सिधार जाने से मेरे दिल की नगरी इस तरह उजड़ कर रह गई है कि अब दोबारा आबाद नहीं हो सकेगी। 'मजाज़'! अब मेरा भी चल-चलाव है, तेरी मौत के क़लक[1] ने मुझे यह बात बता दी है कि ज़ियादा जीना बहुत बड़ी बेग़ैरती और अपने फ़न की[2] बहुत बड़ी तौहीन है।

मेरी रात भीग चुकी है। तारे सर पर टिमटिमा रहे हैं। बिस्तर तह कर लिया गया है, कमर बांध ली गई है और अब यह मुसाफ़िर भी तैयार हो चुका है।

'मजाज़'! घबराना नहीं, 'जोश' भी आ रहा है, जल्द आ रहा है। घबराना नहीं ऐ 'मजाज़'! "

—'जोश' मलीहाबादी

1. शोक 2. कला की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चयन

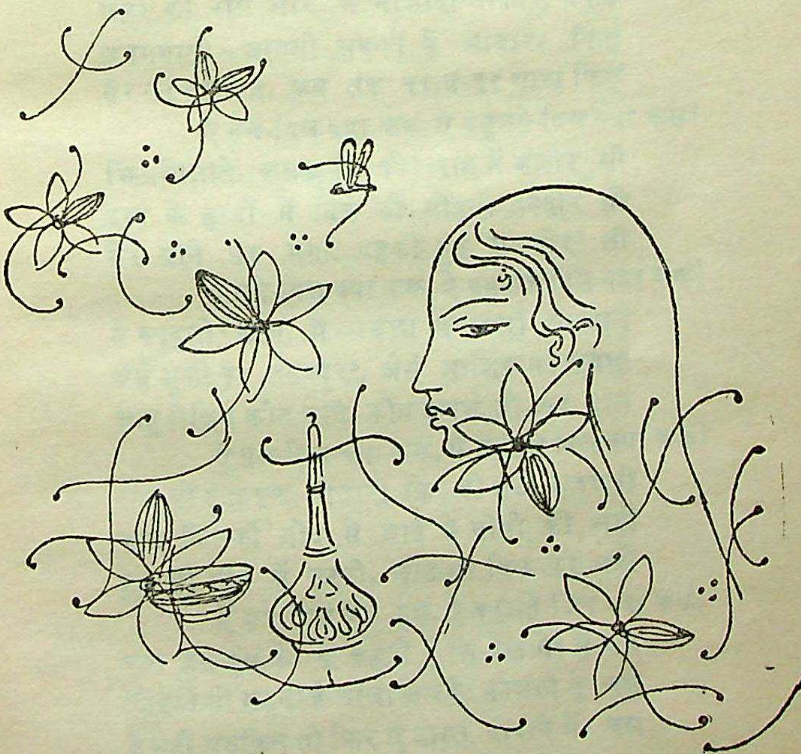

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आवारा

शहर की रात और मैं नाशादो-नाकारा[1] फिरूं
जगमगाती जागती सड़कों पे आवारा फिरूं
ग़ैर की बस्ती है, कब तक दर-ब-दर मारा फिरूं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

झिलमिलाते क़ुमक़ुमों की[2] राह में ज़ंजीर सी
रात के हाथों में दिन की मोहनी तस्वीर सी
मेरे सीने पर मगर दहकी हुई शमशीर[3] सी
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

ये रुपहली[4] छांव, ये आकाश पर तारों का जाल
जैसे सूफ़ी का तसव्वुर[5], जैसे आशिक़ का खयाल
आह लेकिन कौन जाने, कौन समझे जी का हाल
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

फिर वो टूटा इक सितारा, फिर वो छटी फुलझड़ी
जाने किसकी गोद में आई ये मोती की लड़ी
हूक-सी सीने में उट्ठी, चोट-सी दिल पर पड़ी
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

रात हंस-हंस के ये कहती है कि मैखाने[6] में चल
फिर किसी शहनाज़े-लाला-रुख के[7] काशाने में[8] चल
ये नहीं मुमकिन तो फिर ऐ दोस्त वीराने में चल
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

---

1. उदास और बेकार 2. बिजली की बत्तियों की 3. तलवार 4. चांदी-रंग 5. अनुध्यान 6. मधुशाला 7. लाला के फूल-ऐसे मुखड़े वाली के 8. मकान में

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर तरफ़ बिखरी हुई रंगीनियां, रा'नाईयां
हर क़दम पर इश्रतें[1] लेती हुई अंगड़ाईयां
बढ़ रही हैं गोद फैलाए हुए रुसवाईयां
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

रास्ते में रुक के दम ले लूं, मिरी आदत नहीं
लौटकर वापस चला जाऊं, मिरी फ़ितरत[2] नहीं
और कोई हमनवा[3] मिल जाए, ये क़िसमत नहीं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

मुन्तज़िर है एक तूफ़ाने-बला[4] मेरे लिए
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा[5] मेरे लिए
पर मुसीबत है मिरा अहदे-वफ़ा[6] मेरे लिए
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

जी में आता है कि अब अहदे-वफ़ा भी तोड़ दूं
उनको पा सकता हूं मैं, ये आसरा भी तोड़ दूं
हां मुनासिब है, ये ज़ंजीरे-हवा[7] भी तोड़ दूं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

इक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब[8]
जैसे मुल्ला का अमामा[9], जैसे बनिये की किताब
जैसे मुफ़लिस[10] की जवानी, जैसे बेवा का शबाब[11]
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

दिल में इक शो'ला भड़क उट्ठा है, आख़िर क्या करूं
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है, आखिर क्या करूं
ज़ख़्म सीने में महक उट्ठा है, आखिर क्या करूं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते दिल क्या करूं!

---

1. सुख-भोग 2. स्वभाव या प्रकृति 3. साथी 4. विपत्तियों का तूफ़ान 5. खुले हुए 6. प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा 7. वायु की ज़ंजीर (व्यर्थ की आशा) 8. चांद 9. पगड़ी 10. निर्धन 11. यौवन

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जी में आता है ये मुर्दा चांद-तारे नोच लूं
इस किनारे नोच लूं और उस किनारे नोंच लूं
एक-दो का ज़िक्र क्या, सारे के सारे नोच लूं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

मुफ़लिसी और ये मज़ाहिर[1] हैं नज़र के सामने
सैंकड़ों सुल्ताने-जाबिर[2] हैं नज़र के सामने
सैंकड़ों चंग़ेज़ो-नादिर हैं नज़र के सामने
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते दिल क्या करूं!

लेके इक चंग़ेज़ के हाथों से ख़ंजर तोड़ दूं
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूं
कोई तोड़े या न तोड़े मैं ही बढ़कर तोड़ दूं
ऐ ग़मे दिल-क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

बढ़के इस इन्दर-सभा का साज़ो-सामां फूंक दूं
इसका गुलशन फूंक दूं, उसका शबिस्तां[3] फूंक दूं
तख़्ते-सुल्तां[4] क्या, मैं सारा क़स्रे-सुल्तां[5] फूंक दूं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं!

---

1. दृश्य 2. अत्याचारी बादशाह 3. शयनागार 4. शाही तख्त 5. शाही महल

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक ग़मगीन याद

मिरे पहलू-ब-पहलू जब वो चलती थी गुलिस्तां में
फ़राज़े-आस्मां पर[1] कहकशां[2] हसरत से तकती थी
मोहब्बत जब चमक उठती थी उसकी चश्मे-खंदां में[3]
ख़ुमस्ताने-फ़लक से[4] नूर की सहबा[5] छलकती थी

मिरे बाज़ू पे जब वो ज़ुल्फ़े-शबगूं[6] खोल देती थी
ज़माना नकहते-ख़ुल्दे-बरीं में[7] डूब जाता था
मिरे शाने पे जब सर रख के ठंडी सांस लेती थी
मिरी दुनिया में सोज़ो-साज़ का तूफ़ान आता था

वो मेरा शे'र जब मेरी ही लै में गुनगुनाती थी
मनाज़िर झूमते थे बाम-ओ-दर को[8] वज्द[9] आता था
मिरी आंखों में आंखें डालकर जब मुस्कराती थी
मिरे ज़ुल्मतकदे का[10] ज़र्रा-ज़र्रा जगमगाता था

उमंड आते थे जब अश्के-मोहब्बत[11] उसकी पलकों तक
टपकती थी दरो-दीवार से शोख़ी तबस्सुम की[12]
जब उसके होंट आ जाते थे अज़-ख़ुद[13] मेरे होंटों तक
झपक जाती थीं आंखें आस्मां पर माहो-अंजुम की[14]

---

1. ऊंचे आकाश पर 2. आंकाश-गंगा 3. हंसती हुई आंखों में 4. आकाश-रूपी मधुशाला से 5. प्रकाश रूपी शराब 6. रात-ऐसे काले केश 7. स्वर्ग की सुगन्ध में 8. दरवाज़ों और छतों को 9. मस्ती में झूमना 10. अंधेरे घर (दिल) का 11. प्रेम के आंसू 12. मुस्कराहट की 13. आप ही आप 14. चांद-सितारों की

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वो जब हंगामे-रुख़सत[1] देखती थी मुझको मुड़-मुड़कर
तो ख़ुद फ़ितरत के दिल में महशरे-जज़्बात[2] होता था
वो महवे-ख़्वाब[3] जब होती थी अपने नर्म बिस्तर पर
तो उसके सर पे मरियम का मुक़द्दस[4] हाथ होता था

आज

कारफ़र्मा[5] फिर मिरा ज़ौक़े-ग़ज़ल-ख़्वानी[6] है आज
फिर नफ़स का[7] साज़ गर्मे-शो'ला-अफ़शानी है[8] आज
फिर निगाहे-शौक़ की[9] गर्मी है और रू-ए-निगार[10]
फिर अ़रक़-आलूद[11] इक काफ़िर की पेशानी है आज
फिर मिरे लब पर क़सीदे[12] हैं लबो-रुख़सार के[13]
फिर किसी चेहरे पे ताबानी[14] सी ताबानी है आज
हुस्न इस दर्जा निशाते-हुस्न में[15] डूबा हुआ
अंखड़ियां बेख़ुद, शमीमे-ज़ुल्फ़[16] दीवानी है आज

---

1. विदा के समय 2. मनोभावों की प्रलय 3. सोई हुई 4. पवित्र 5. कार्य-रत 6. गीत गाने की अभिरुचि 7. सांस का 8. शोले बिखेर रहा है 9. इश्क़ रूपी नज़र की 10. प्रेयसी का मुखड़ा 11. पसीना-पसीना 12. होंठों पर स्तुति गान 13. होंठों और कपोलों के 14. आभा 15. सौंदर्य की मस्ती में 16. केशों की सुगन्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लर्ज़िशे-लब में[1] शराबो-शे'र का तूफ़ान है
जुंबिशे-मिज़गां में[2] अफ़सूने-ग़ज़लख़्वानी[3] है आज
वो नफ़स की ज़मज़मा-संजी[4] नज़र की गुफ़्तगू
सीना-ए-मासूम में[5] इक तुफ़ां तुग़यानी[6] है आज
वो इशारे हैं बहक जाना ही ऐने-होश है[7]
होश में रहना यक़ीनन सख़्त नादानी है आज
कश्मकश सी कश्मकश में है मज़ाक़े-आशिक़ी
कामरां[8] सी कामरां हर सई-ए-इम्कानी[9] है आज
हुस्न के चेहरे पे है नूरे-सदाक़त की[10] दमक
इश्क़ के सर पर कुलाहे-फ़ख्रे-इन्सानी[11] है आज
शौक़ से[12] मौक़ा-शनासी[13] की तवक़्क़ो[14] भी ग़लत
मैंने उनकी शक्ल भी मुश्किल से पहचानी है आज

---

1. होंठों की थरथराहट में 2. पलकों के हिलने में 3. संगीत का जादू 4. सांसों का संगीत 5. सरल हृदय में 6. विचित्र बाढ़ 7. सही अर्थ में होश है 8. सफल, भाग्यवान 9. संभव चेष्टा 10. सत्य के तेज की 11. मनुष्यता के गौरव का ताज 12. इश्क़ के कारण 13. अवसर पहचानना 14. आशा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नूरा
(नर्स की चारागरी[1])

वो नौख़ेज़[2] 'नूरा' वो इक बिनते-मरियम[3]
वो मख़्मूर आंखें वो गेसू-ए-पुरख़म[4]
वो अर्ज़े-कलीसा की[5] इक माहपारा[6]
वो दैरो-हरम[7] के लिए इक शरारा
वो फ़िर्दौसे-मरियम[8] का इक ग़ुन्चा-ए-तर[9]
वो तस्लीस की[10] दुख़्तरे-नेक-अख़्तर[11]
वो इक नर्स थी चारागर[12] जिसको कहिये
मुदावा-ए-दर्दे-जिगर[13] जिसको कहिये
जवानी से तिफ़्ली[14] गले मिल रही थी
हवा चल रही थी कली खिल रही थी
वो पुररो'ब तेवर वो शादाब[15] चेहरा
मता-ए-ज़वानी पे[16] फ़ितरत का[17] पहरा
मिरी हुक्मरानी है अहले-ज़मीं पर[18]
ये तह्‌रीर[19] था साफ़ उसकी जबीं पर[20]
सफ़ेद और शफ्फ़ाफ़ कपड़े पहन कर
मिरे पास आती थी इक हूर बन कर

---

1. उपचार 2. नवयुवा 3. मरियम की बेटी 4. पेचदार केश 5. ईसाइयों के देश की 6. चांद का टुकड़ा 7. मन्दिर, मस्जिद 8. मरियम की जन्नत 9. खिली कली 10. ईसाइयत की 11. सुपुत्री 12. उपचारक 13. हृदय की पीड़ा का इलाज 14. बाल्यावस्था 15. सुसिक्त, खिला 16. यौवन-धन पर 17. प्रकृति का 18. धरती के वासियों पर 19. लिखा हुआ 20. माथे पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वो इक आस्मानी फ़रिश्ता थी गोया
कि अंदाज़ था उसमें 'जिबरील' का सा

वो तस्कीने-दिल थी सुकूने-नज़र थी
निगारे-शफ़क़[1] थी जमाले-सहर[2] थी

वो शो'ला, वो बिजली, वो जल्वा, वो परतौ[3]
'सुलेमां' की वो इक कनीज़े-सुबकरौ[4]

कभी उसकी शोख़ी में संजीदगी थी
कभी उसकी संजीदगी में भी शोख़ी

घड़ी चुप, घड़ी करने लगती थी बातें
सरहाने मिरे काट देती थी रातें

अजब चीज़ थी वो, अजब राज़[5] थी वो
कभी सोज़ थी वो, कभी साज़ थी वो

नक़ाहत के आलम में[6] जब आंख उठती
नज़र मुझ को आती मोहब्बत की देवी

वो इस वक़्त इक पैकरे-नूर[7] होती
तख़ैयुल की परवाज़ से[8] दूर होती

वो अंजील पढ़कर सुनाती थी मुझ को
हंसाती थी मुझ को, रुलाती थी मुझ को

दवा अपने हाथों से मुझको पिलाती
"अब अच्छे हो" हर रोज़ मुज़्दा[9] सुनाती

---

1. अरुणिमा का सौंदर्य 2. प्रभात का सौंदर्य 3. प्रतिबिम्ब 4. सुलेमान बादशाह की मृदुल चाल वाली दासी 5. भेद 6. क्षीणता की स्थिति में 7. साकार प्रकाश 8. कल्पना की उड़ान से 9. शुभ समाचार

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरहाने मिरे एक दिन सर झुकाये
वो बैठी थी तकिये पे कुहनी टिकाये

ख़यालाते - पैहम में खोई हुई सी
न जागी हुई सी, न सोई हुई सी

झपकती हुई बार-बार उसकी पलकें
जबीं पुरशिकन[1] बेक़रार उसकी पलकें

वो आंखों के साग़र छलकते हुए से
वो आरिज़ के[2] शो'ले भड़कते हुए से

लबों में[3] था लालो-गुहर का[4] ख़ज़ाना
नज़र आरिफ़ाना[5] अदा राहिबाना[6]

महक गेसुओं से[7] चली आ रही थी
मिरे हर नफ़स[8] में बसी जा रही थी

मुझे लेटे-लेटे शरारत की सूझी
जो सूझी भी तो किस क़ियामत की सूझी

ज़रा बढ़ के कुछ और गर्दन झुका ली
लबे-लाले-अफ़शां से[9] इक शै चुरा ली

वो शै जिसको अब क्या कहूं क्या समझिये
बहिश्ते-जवानी का[10] तोहफ़ा समझिये

मैं समझा था शायद बिगड़ जाएगी वो
हवाओं से लड़ती है लड़ जाएगी वो

---

1. बल पड़ा माथा 2. कपोलों के 3. होंठों में 4. हीरे-मोतियों का 5. ब्रह्मज्ञानियों की सी 6. वैरागियों की सी 7. केशों से 8. श्वास 9. लाली बिखेरते होंठों से 10. यौवन-रूपी स्वर्ग का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं देखूंगा उसके बिफरने का आलम[1]
जवानी का ग़ुस्सा बिखरने का आलम
इधर दिल में इक शोरे-महशर बपा था[2]
मगर उस तरफ़ रंग ही दूसरा था
हंसी, और हंसी इस तरह खिलखिलाकर
कि शम्ए-हया[3] रह गई झिलमिला कर
नहीं जानती है मिरा नाम तक वो
मगर भेज देती है पैग़ाम तक वो
ये पैग़ाम आते ही रहते हैं अक्सर
कि किस रोज़ आओगे बीमार होकर ?

1. स्थिति 2. प्रलय का शोर हो रहा था 3. लज्जा-रूपी दीपक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंधेरी रात का मुसाफ़िर

जवानी की अन्धेरी रात है ज़ुल्मत का[1] तूफ़ां है
मिरी राहों से नूरे-माहो-अंजुम[2] तक गुरेज़ां है
ख़ुदा सोया हुआ है, अहरमन[3] महशर-बदामा[4] है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

ग़मो-हिरमां[5] की यूरिश[6] है, मसाइब की[7] घटायें हैं
जुनूं की[8] फ़ित्नाख़ेज़ी[9], हुस्न की ख़ूनीं अदायें हैं
बड़ी पुरज़ोर आंधी है, बड़ी काफ़िर बलायें हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

फ़ज़ा में मौत के तारीक[10] साए थरथराते हैं
हवा के सर्द झोंके क़ल्ब पर[11] ख़ंजर चलाते हैं
गुज़श्ता इश्रतों के[12] ख्वाब आईना दिखाते हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

ज़मीं चीं-बर-जबीं[13] है आस्मां तख़रीब पर[14] माइल
रफ़ीक़ाने-सफ़र में कोई बिस्मिल[15] है कोई घाइल
तआक़ुब में लुटेरे हैं, चटाने राह में हाइल
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

---

1. अन्धकार का 2. चांद-सितारों का प्रकाश 3. शैतान 4. प्रलय मचाए हुए 5. दुखों और निराशाओं की 6. आक्रमण 7. आपत्तियों की 8. उन्माद की 9. उपद्रव 10. काले 11. हृदय पर 12. सुख भोगों के 13. माथे पर बल डाले हुए 14. विनाश पर 15. आहत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उफ़क़ पर[1] ज़िन्दगी के लश्करे-ज़ुलमत का डेरा है
हवादिस के[2] क़ियामत-ख़ेज़ तूफ़ानों ने घेरा है
जहां तक देख सकता हूं, अंधेरा ही अंधेरा है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

चिराग़े-दैर[3] फ़ानूसे-हरम[4] क़ंदीले-रहबानी[5]
ये सब हैं मुद्दतों से बेनियाज़े-नूरे-इर्फ़ानी[6]
न नाक़ूसे-बिरहमन[7] है, न आहंगे-हुदी-ख़्वानी[8]
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

तलातुम ख़ेज़[9] दरिया, आग के मैदान हाइल हैं
गरजती आंधियां, बिखरे हुए तूफ़ान हाइल हैं
तबाही के फ़रिश्ते, जब्र के शैतान हाइल हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

फ़ज़ा में शो'ला-अफ़शां[10] देवे-इस्तब्दाद का[11] ख़ंजर
सियासत के सनानी[12] अहले-ज़र के[13] ख़ूंचकां[14] तेवर
फ़रेबे-बेख़ुदी[15] देते हुए बिल्लौर के[16] साग़र
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

---

1. क्षितिज पर 2. दुर्घटनाओं के 3. मन्दिर का दीपक 4. मस्जिद का फ़ानूस 5. गिर्जाघर की मोमबत्ती 6. ब्रह्म-ज्ञान की ज्योति से बेपरवाह 7. ब्राह्मण के शंख (फूंकने की आवाज़) 8. (मुल्ला के) कुरान पढ़ने का आलाप 9. तूफ़ानी 10. शोले बिखेर रहा है 11. अत्याचाररूपी देव का 12. नुकीले 13. पूंजीपतियों के 14. जिन से लहू टपक रहा है 15. आत्म-विसर्जन का धोखा 16. शीशे के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बदी पर बारिशे-लुत्फ़ो-करम, नेकी पे तक़्रीरें
जवानी के हंसी ख़्वाबों की हैबतनाक ता'बीरें[1]
नुकीली तेज़ संगीनें हैं ख़ूं-आशाम[2] शमशीरें
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

हुकूमत के मज़ाहिर[3] जंग के पुरहौल नक़्शे हैं
कुदालों के मुक़ाबिल तोप बन्दूक़ें हैं नेज़े हैं
सलासिल[4], ताज़ियाने, बेड़ियां फांसी के तख़्ते हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

उफ़ुक़ पर जंग का ख़ूनी सितारा जगमगाता है
हर इक झोंका हवा का मौत का पैग़ाम लाता है
घटा की घन-गरज से क़ल्बे-गेती[5] कांप जाता है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

फ़ना के आहनी वहशत-असर[6] क़दमों की आहट है
धुएं की बदलियां हैं गोलियां की सनसनाहट है
अजल के[7] क़हक़हे हैं ज़लज़लों की गड़गड़ाहट है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

---

1. स्वप्न-फल 2. लहू पीने वाली 3. प्रदर्शन 4. ज़ंजीरें 5. कीड़े
6. संसार का हृदय 7. भीषण 8. काल के

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किससे मोहब्बत है ?

बताऊं क्या तुझे, ऐ हमनशीं[1] ! किससे मोहब्बत है
मैं जिस दुनिया में रहता हूं वो उस दुनिया की औरत है
सरापा[2] रंगो - बू है पैकरे - हुस्नो - लताफ़त[3] है
बहिश्ते - गोश[4] होती हैं गुहर - अफ़शानियां[5] उसकी

वो मेरे आस्मां पर अख़्तरे - सुबहे - क़ियामत[6] है
सुरैया - बख़्त[7] है, ज़ोहरा-जबीं[8] है माहे - तलअ़त[9] है
मिरा ईमां है, मेरी ज़िन्दगी है, मेरी जन्नत है
मिरी आंखों को ख़ीरा कर गईं[10] ताबानियां[11] उसकी

वो इक मिज़राब है और छेड़ सकती है रगे-जां को
वो चिंगारी है लेकिन फूंक सकती है गुलिस्तां को
वो बिजली है जला सकती है सारी बज़्मे-इमकां को[12]
अभी मेरे ही दिल तक हैं शरर-सामानियां[13] उसकी

ज़बां पर हैं अभी तक इस्मतो-तक़्दीस के[14] नग़मे
वो बढ़ जाती है इस दुनिया से अक्सर इस क़दर आगे
मिरी तख़ईल के[15] बाज़ू भी उसको छू नहीं सकते
मुझे हैरान कर देती है नुक्ता - दानियां उसकी

---

1. साथी 2. सिर से पांव तक 3. सौंदर्य तथा कोमलता की प्रतिमा 4. कानों का स्वर्ग 5. मोती बिखेरना (बातें) 6. प्रलय की प्रभात का सितारा 7. 8. 9. चांद तारों जैसे सुन्दर चेहरे वाला 10. चौंधिया गईं 11. आभाएं 12. संसार को 13. अंगारे बरसाना 14. सतीत्व तथा पवित्रता के 15. कल्पना के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अदाएं लेके आई है वो फ़ितरत के खज़ानों से
जगा सकती है महफ़िल को नज़र के ताज़ियानों से[1]
वो मलिका है ख़िराज उसने लिए हैं बोस्तानों से[2]
बस इक मैंने ही अक्सर की हैं नाफ़रमानियां उसकी

वो मेरी जुर्रतों पर बेनियाज़ी की सज़ा देना
हवस की ज़ुल्मतों पर[3] नाज़ की बिजली गिरा देना
निगाहे-शौक़ की बेबाकियों पर मुस्करा देना
जुनूं को दर्से-तमकीं[4] दे गईं नादानियां उसकी

वफ़ा ख़ुद की है और मेरी वफ़ा को आज़माया है
मुझे चाहा है, मुझको अपनी आंखों पर बिठाया है
मिरा हर शे'र तन्हाई में उसने गुनगुनाया है
सुनी हैं मैंने अक्सर छुपके नग्मा-ख्वानियां[5] उसकी

मिरे चेहरे पे जब भी फ़िक्र के आसार[6] पाए हैं
मुझे तस्कीन दी है मेरे अंदेशे मिटाए हैं
मिरे शाने पे सर तक रख दिया है, गीत गाए हैं
मिरी दुनिया बदल देती हैं ख़ुश अल्हानियाँ[7] उसकी

लबे-ला'लीं पे[8] लाखा है न रुखसारों पे[9] ग़ाज़ा है
जबीने-नूर-अफ़शां पर[10] न झूमर है न टीका है
जवानी है सुहाग उसका, तबस्सुम उसका गहना है
नहीं आलूदा-ए-ज़ुल्मत[11] सहर-दामानियां[12] उसकी

---

1. कोड़ों से 2. बाग़ों से 3. अंधेरों पर 4. सहनशीलता का पाठ 5. गीत गाना 6. चिह्न 7. मधुर स्वर 8. लाल होंठों पर 9. कपोलों पर 10. आभापूर्ण माथे पर 11. अंधकार युक्त 12. सुबह रूपी दामन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई मेरे सिवा उसका निशां पा ही नहीं सकता
कोई उस बारगाहे-नाज़[1] तक जा ही नहीं सकता
कोई उसके जुनूं का ज़मज़मा[2] गा ही नहीं सकता
झलकती हैं मिरे अशआर में जौलानियां[3] उसकी

साक़ी

मिरी मस्ती में अब होश ही का तौर[4] है साक़ी
तिरे साग़र में ये सहबा[5] नहीं कुछ और है साक़ी

भड़कती जा रही है दम-ब-दम इक आग-सी दिल में
ये कैसे जाम हैं साक़ी, ये कैसा दौर है साक़ी

वो शै दे जिससे नींद आ जाए अक़्ले-फ़ित्ना-परवर को[6]
कि दिल आज़ुर्दहे - तमईज़े-लुत्फ़ो - जौर[7] है साक़ी

जवानी और यूं घिर जाए तूफ़ाने-हवादिस में[8]
ख़ुदा रक्खे अभी तो बेख़ुदी का दौर है साक़ी

छलकती है जो तेरे जामसे उस मय का क्या कहना
तिरे शादाब होंटों की मगर कुछ और है साक़ी

मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे-ला' लीं में[9]
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साक़ी

---

1. नाज़ (सुन्दरी) की राज-सभा 2. गान 3. जवानी का जोश 4. रंग-ढंग 5. अंगूरी शराब 6. उपद्रव खड़े करने वाली बुद्धि को 7. अनुकम्पा और अत्याचार के भेद के प्रति उदासीन 8. दुर्घटनाओं के तूफ़ान में 9. लाल रंग के प्याले (होंठों) में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख्वाबे-सहर[1]

मेह्र[2] सदियों से चमकता ही रहा अफ़लाक पर[3]
रात ही तारी रही इन्सान के इद्राक पर[4]

अक़्ल के मैदान में ज़ुल्मत का[5] डेरा ही रहा
दिल में तारीकी, दिमाग़ों में अंधेरा ही रहा

इक न इक मज़्हब की सअ्इ-ए-ख़ाम[6] भी होती रही
अहले-दिल पर बारिशे-इल्हाम[7] भी होती रही

आस्मानों से फ़रिश्ते भी उतरते ही रहे
नेक बन्दे भी ख़ुदा का काम करते ही रहे

इब्ने-मरियम[8] भी उठे, मूसा-ए-इम्रां[9] भी उठे
रामो-गौतम भी उठे, फ़िरऔनो-हामां[10] भी उठे

अह्ले-सैफ़[11] उठते रहे, अह्ले-किताब[12] आते रहे
ईंजनाब उठते रहे, और आंजनाब आते रहे

हुक्मरां दिल पर रहे सदियों तलक असनाम[13] भी
अब्रे-रहमत[14] बन के छाया दह्र पर[15] इस्लाम भी

---

1. सुबह होने का सपना 2. सूर्य 3. आकाश पर 4. बुद्धि पर 5. अंधकार का 6. विफल प्रयास 7. देववाणी रूपी वर्षा 8. मरियम के बेटे (ईसा) 9. हज़रत मूसा 10. उद्दण्ड शासकों के नाम 11. तलवार के धनी 12. पवित्र धार्मिक ग्रन्थ रचने वाले (हजरत मोहम्मद आदि) 13. मूर्तियां 14. कृपा का बादल 15. संसार पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मस्जिदों में मौलवी ख़ुत्बे सुनाते ही रहे
मन्दिरों में बिरहमन अश्लोक गाते ही रहे

आदमी मिन्नतकशे - अर्‌बाबे - इर्फ़ां ही रहा[1]
दर्दे - इन्सानी मगर महरूमे - दर्मां[2] ही रहा

इक न इक दर पर जबीने-शौक़[3] घिसती ही रही
आदमियत ज़ुल्म की चक्की में पिसती ही रही

रहबरी जारी रही, पैग़मबरी जारी रही
दीन के पर्दे में जंगे-ज़रगरी जारी रही

अहले-बातिन[4] इल्म से सीनों को गर्माते रहे
जिह्ल के[5] तारीक साए हाथ फैलाते रहे

ये मुसलसल आफ़तें, ये यूरिशें[6], ये क़त्ले-आम
आदमी कब तक रहे औहामे-बातिल का[7] ग़ुलाम

ज़ेह्‌ने-इन्सानी ने[8] अब औहाम के ज़ुल्मात में[9]
ज़िन्दगी की सख़्त तूफ़ानी अंधेरी रात में

कुछ नहीं तो कम-से-कम ख़्वाबे-सहर[10] देखा तो है
जिस तरफ़ देखा न था अब तक उधर देखा तो है

---

1. देवताओं का कृपाकांक्षी 2. उपचार से वंचित 3. जिज्ञासा रूपी माथा 4. ब्रह्मज्ञानी 5. अज्ञानता के 6. आक्रमण 7. मिथ्या भ्रमों का 8. मानव-मस्तिष्क ने 9. भ्रमों के अंधेरों में 10 सुबह होने का सपना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मजबूरियां

मैं आहें भर नहीं सकता कि नग़मे गा नहीं सकता
सुकूं लेकिन मिरे दिल को मुयस्सर आ नहीं सकता

कोई नग़मे तो क्या अब मुझसे मेरा साज़ भी ले ले
जो गाना चाहता हूं आह, वो मैं गा नहीं सकता

मताए-सोज़ो-साज़ो-ज़िन्दगी[1], पैमाना-ओ-बरबत[2]
मैं ख़ुद को इन खिलौनों से भी अब बहला नहीं सकता

वो बादल सर पे छाए हैं कि सर से हट नहीं सकते
मिला है दर्द वो दिल को कि दिल से जा नहीं सकता

हवसक़ारी[3] है जुर्मे-ख़ुदकुशी मेरी शरीअ़त[4] में
ये हद्दे-आख़िरी है मैं यहां तक जा नहीं सकता

न तूफ़ां रोक सकते हैं न आंधी रोक सकती है
मगर फिर भी मैं उस क़स्रे-हसीं[5] तक जा नहीं सकता

वो मुझको चाहती है और मुझ तक आ नहीं सकती
मैं उसको पूजता हूं और उसको पा नहीं सकता

ये मजबूरी सी मजबूरी, ये लाचारी सी लाचारी
कि उसके गीत भी जी खोलकर मैं गा नहीं सकता

---

1. जीवन के सोज़ और साज़ (दुख-सुख) की निधि 2. शराब का प्याला और बरबत (एक बाजा) 3. लोलुपता 4. धर्म 5. सुन्दर महल (प्रेयसी का)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज़बां पर बेख़ुदी में नाम उसका आ ही जाता है
अगर पूछे कोई, ये कौन है ? बतला नहीं सकता

कहां तक क़िस्साए-आलामे-फ़ुर्क़त, मुख़्तसर ये है
यहां वो आ नहीं सकती, वहां मैं जा नहीं सकता

हदें वो खेंच रक्खी हैं हरम के पासबानों ने
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम भी पहुंचा नहीं सकता

आज की रात

देखना जज़्बे-मोहब्बत का[1] असर आज की रात
मेरे शाने पे है उस शोख़ का सर आज की रात

और क्या चाहिए अब ऐ दिले-मजरूह[2] तुझे
उसने देखा तो ब-अंदाज़े-दिगर[3] आज की रात

फूल क्या ख़ार[4] भी हैं आज गुलिस्तां-ब-किनार[5]
संगरेज़े[6] हैं निगाहों में गुहर[7] आज की रात

मह्वे-गुलगश्त[8] है ये कौन मिरे दोश-ब-दोश[9]
कहकशां[10] बन गई हर राहगुज़र आज की रात

शबनमिस्ताने-तजल्ली का[11] फ़ुसूं[12] क्या कहिये
चांद ने फेंक दिया रख़्ते-सफ़र[13] आज की रात

1. प्रेम की भावना का 2. घायल हृदय 3. अन्य ढंग से (प्रेमपूर्वक) 4. कांटे 5. बाग़ को प्यारे 6. पत्थर के टुकड़े 7. मोती 8. पुष्प-विहार में तन्मय 9. कंधे से कंधा मिलाए हुए (साथ-साथ) 10. आकाश गंगा 11. प्रेमिका के मुखड़े का 12. जादू 13. यात्रा की सामग्री

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नूर ही नूर है, किस सिम्त उठाऊं आंखें
हुस्न ही हुस्न है ताहद्दे-नज़र आज की रात

अल्ला-अल्लाह वो पेशानी-ए-सीमीं का[1] जमाल[2]
रह गई जम के सितारों की नज़र आज की रात

आरिज़े-गर्म पे[3] वो रंगे-शफ़क़ की[4] लहरें
वो मिरी शोख़-निगाही का असर आज की रात

नर्गिसे-नाज में[5] वो नींद का हल्का-सा ख़ुमार
वो मिरे नग़मए-शीरीं का[6] असर आज की रात

नग़मा-ओ-मय का ये तूफ़ाने-तरब[7] क्या कहिये
घर मिरा बन गया 'ख़य्याम' का घर आज की रात

मेरी हर सांस पे वो उनकी तवज्जुह, क्या ख़ूब
मेरी हर बात पे वो जुंबिशे-सर[8] आज की रात

उफ़ वो वारफ़्तगी-ए-शौक़ में[9] इक वह्मे-लतीफ़[10]
कपकपाते हुए होंटों पे नज़र आज की रात

अपनी रिफ़अत पे[11] जो नाज़ां[12] हैं तो नाजां ही रहें
कह दो अंजुम से[13] कि देखें न इधर आज की रात

उनके अल्ताफ़ का[14] इतना ही फ़ुसूं[15] काफ़ी है
कम है पहले से बहुत दर्दे-जिगर आज की रात

---

1. रजत माथे का 2. रूप, सौंदर्य 3. गर्म कपोलों पर 4. सान्ध्य लालिमा की 5. प्रेयसी की नर्गिसी आंखों में 6. मधुर गीत का 7. हर्ष का तूफ़ान 8. सिर हिलाकर हामी भरना 9. प्रेमोन्माद में 10. सुन्दर भ्रम 11. उच्चता पर 12. गर्वित 13. सितारों से 14. कृपाओं का 15. जादू

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनका जश्ने-सालगिरह[1]

इक मजमा-ए-रंगी में[2] वो घबराई हुई सी
बैठी है अजब नाज़ से शर्माई हुई सी
आंखों में हया लब पे[3] हंसी आई हुई सी

होंटों पे फ़िदा[4] रूहे-बहारे-गुलो-नसरीं[5]
आंखों की चमक रूकशे-बज़्मे-महो-परवीं[6]
पैराहने-ज़रतार में[7] इक पैकरे-सीमीं[8]

लहरें सी वो लेता हुआ इक फूल का सेहरा
सेहरे में झमकता हुआ इक चांद सा चेहरा
इक रंग सा रुख़ पर[9] कभी हल्का, कभी गहरा

हर सांस में अहसासे-फ़ुरावां की[10] कहानी
ख़ामोशी-ए-महजूब में[11] इक सैले-मआनी[12]
जज़्बात के तूफ़ां में है दोशीज़ा[13] जवानी

---

1. वर्षगांठ का उत्सव 2. रंगीन जनसमूह में 3. होंठों पर 4. न्योछावर 5. फूलों की बहार की आत्मा 6. चांद-तारों की सभा को शर्माने वाली 7. सोने के तारों से बने लिबास में 8. चांदी की प्रतिमा 9. चेहरे पर 10. अनुभूतियों के आधिक्य की 11. संकुचित मौन में 12. अर्थों की बाढ़ 13. सुकुमार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़ितरत नए जज़्बात के दर[1] खोल रही है
मीज़ाने-जवानी में[2] इसे तोल रही है
लब साकित-ओ-सामत[3] हैं, नज़र बोल रही है

सरशार[4] निगाहों में ह्या झूम रही है
हैं रक्स[5] में अफ़लाक[6], ज़मीं घूम रही है
शायर की वफ़ा बढ़ के क़दम चूम रही है

ऐ तू कि तेरे दम से मिरो ज़मज़मा-ख्वानो[7]
हो तुझको मुबारक ये तिरी नूरे-जहानी[8]
अफ़कार से महफ़ूज़[9] रहे तेरी जवानी

छलके तिरी आंखों से शराब और ज़ियादा
महकें तिरे आरिज़ के[10] गुलाब और ज़ियादा
अल्लाह करे ज़ोरे-शबाब[11] और ज़ियादा

---

1. दरवाज़े 2. जवानी की तराज़ू में 3. मौन, स्थिर 4. उन्मत्त 5. नृत्य 6. सातों आसमान 7. गायन 8. संसार को प्रकाशमान करना 9. चिन्ताओं से सुरक्षित 1. कपोलों के 11. यौवन का ज़ोर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वतन आशोब[1]

सब्ज़ा-ओ-बर्गो-लाला-ओ-सर्वो-समन को[2] क्या हुआ
सारा चमन उदास है, हाय चमन को क्या हुआ
एक सुकूत[3] हर तरफ़ होश-रुबा-ओ-हौलनाक[4]
ख़ुल्दे-वतन के[5] पासबां, ख़ुल्दे-वतन को क्या हुआ
रक़्से-तरब[6] किधर गया, नग़्मा-तराज़[7] क्या हुए
ग़म्ज़ा-ओ-नाज़[8] क्या हुए अ़श्वा-ओ-फ़न[9] को क्या हुआ
जिसकी नवाए-दिलसितां[10] जमज़मः-ए-साज़े-शौक़[11] थी
कोई बताओ उस बुते-ग़ुंचा-दहन को[12] क्या हुआ
छाई है क्यों फ़सुर्दगी[13] आलमे-हुस्नो-इश्क़ पर[14]
आज वो 'नल' किधर गए आज 'दमन'[15] को क्या हुआ
आंखों में ख़ौफ़ो यास[16] है चेहरा उदास-उदास है
अस्रे-रवां की[17] लैला-ए-बुर्क़ा फ़िगन को[13] क्या हुआ

---

1. अशान्ति, कोलाहल 2. फूल-पत्ती आदि (देशवासियों) को 3. चुप्पी 4. होश उड़ाने वाला, भयंकर 5. देश रूपी स्वर्ग के 6. खुशी का नाच 7. गायक 8, 9. हाव-भाव इत्यादि 10. हृदयाकर्षक स्वर 11. इश्क़ के साज़ का मधुर संगीत 12. कली जैसे मुंह वाली सुन्दरी को 13. उदासी 14. सौन्दर्य तथा प्रेम के संसार पर 15 दमयंती 16. भय तथा निराशा 17. आधुनिक काल की 18. उस लैला को जिसने चेहरे पर से निक़ाब उतार रखा है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आह ख़िरद[1] किधर गई, आह जुनूं ने[2] क्या किया
आह शबाबे - ख़ूगरे-दारो - रसन को[3] क्या हुआ
कोई बताए अज़्मते - ख़ाके-वतन[4] कहां है अब
कोई बताए ग़ैरते-अह्ले-वतन को[5] क्या हुआ
कोह[6] वही, दमन[7] वही दश्त[8] वही, चमन वही
फिर ये 'मजाज़' जज़्बए-हुब्बे-वतन को[9] क्या हुआ
(1950)

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल
बादल बिजली रैन अंधियारी दुख की मारी परजा सारी
बूढ़े-बच्चे सब दुखिया हैं दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती-बस्ती लूट मची है सब बनिए हैं सब ब्योपारी
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

---

1. बुद्धि 2. उन्माद ने 3. सूली और फांसी के अभ्यस्त यौवन को 4. देश की मिट्टी की महानता 5. देशवासियों के स्वाभिमान को 6. पहाड़ 7. वीराने 8. जंगल 9. देश-प्रेम की भावना को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कलजुग में जग के रखवाले चांदी वाले सोने वाले
देसी हों या परदेसी हों नीले, पीले, गोरे, काले
मक्खी, भुनगे भिन-भिन करते ढूंडे हैं मकड़ी के जाले
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

क्या अफ़रंगी, क्या तातारी[1] आंख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सर्माए के धंदे कब तक ये सर्मायादारी
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

नामी और मशहूर नहीं हम लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोका और मज़दूरों को दें ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंज़िल अपने पांव के नीचे मंलज़ि से अब दूर नहीं हम
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

बोल कि तेरी ख़िदमत की है बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाए हैं बोल कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र[2] उठाया बोल कि हमसे हश्र उठा है
बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

(1945)

---

1. तुर्किस्तान निवासी 2. प्रलय, तूफ़ान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रात और रेल

फिर चली है रेल इस्टेशन से लहराती हुई
नीम-शब की[1] ख़ामुशी में ज़ेरे-लब[2] गाती हुई
डगमगाती, झूमती, सीटी बजाती, खेलती
वादी-ओ-कुहसार की[3] ठंडी हवा खाती हुई
तेज़ झोंकों में वो छम-छम का सरोदे-दिलनशीं[4]
आंधियों में मेंह बरसने की सदा[5] आती हुई
जैसे मौजों का तरन्नुम[6] जैसे जल-परियों के गीत
एक-इक लै में हज़ारों ज़मज़मे[7] गाती हुई
नौनिहालों को सुनाती मीठी-मीठी लोरियां
नाज़नीनों को[8] सुनहरे ख़्वाब दिखलाती हुई
ठोकरें खाकर, लचकती, गुनगुनाती, झूमती
सरख़ुशी में घुंघरुओं की ताल पर गाती हुई
नाज़ से हर मोड़ पर खाती हुई सौ पेचो-ख़म[9]
इक दुल्हन अपनी अदा से आप शर्माती हुई
रात की तारीकियों में[10] झिलमिलाती, कांपती
पटरियों पर दूर तक सीमाब[11] छलकाती हुई
जैसे आधी रात को निकली हो इक शाही बरात
शादियानों की[12] सदा से वज्द में[13] आती हुई

---

1. आधी रात की 2. होंठों ही होंठों में 3. घाटियों और पर्वतों की 4. हृदयस्पर्शी संगीत 5. आवाज़ 6. गुंजार, संगीत 7. गीत 8. सुकुमारियों को 9. बल 10. अंधेरों में 11. पारा 12. बाजों की 13. मस्ती में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुन्तशिर करके[1] फ़ज़ा में जा-ब-जा चिंगारियां
दामने-मौजे-हवा में[2] फूल बरसाती हुई
तेज़तर होती हुई मंज़िल-ब-मंज़िल दम-ब-दम
रफ़्ता-रफ़्ता अपना असली रूप दिखलाती हुई
सीना-ए-कुहसार पर[3] चढ़ती हुई बेइख़्तियार
एक नागन जिस तरह मस्ती में लहराती हुई
इक सितारा [टूटकर जैसे रवां[4] हो अर्श पर[5]
रिफ़्अ़ते-कुहसार से[6] मैदान में आती हुई
इक बगूले की तरह बढ़ती हुई मैदान में
जंगलों में आंधियों का ज़ोर दिखलाती हुई
याद आ जाए पुराने देवताओं का जलाल[7]
इन क़ियामत-ख़ेज़ियों के[8] साथ बल खाती हुई
एक रख़्शे-बेइनां[9] की बर्क़-रफ़्तारी के[10] साथ
ख़ंदक़ों को फांदती, टीलों से कतराती हुई
मुर्ग़ज़ारों में[11] दिखाती जूए-शीरीं का[12] ख़िराम[13]
वादियों में अब्र के[14] मानिंद मंडलाती हुई
इक पहाड़ी पर दिखाती आबशारों की झलक
इक बियाबां में चिराग़े-तूर[15] दिखलाती हुई

---

1. बिखेरकर 2. वायु की लहरों के आंचल में 3. पर्वत की छाती पर 4. गतिशील 5. आकाश पर 6. पर्वत के शिखर पर से 7. तेज 8. प्रलयकारियों के 9. ऐसा घोड़ा जिसके मुंह में लगाम न हो 10. बिजली की सी तेजी के 11. हरे भरे जंगलों में 12. मीठे पानी की नदी का 13. मंद गति 14. बादलों के 15. तूर नामक पहाड़ पर चमकता दीपक, प्रथा है कि वहां हजरत ईसा से खुदा का बिजली के संकेतों द्वारा वार्तालाप हुआ था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जुस्तजू में मंज़िले-मक़सूद की दीवानावार
अपना सर धुनती, फ़ज़ा में बाल बिखराती हुई

छेड़ती इक वज्द के आलम में साज़े-सरमदी[1]
ग़ैज़ के आलम में[2] मुंह से आग बरसाती हुई

रेंगती, मुड़ती, मचलती, तिलमिलाती, हांपती
अपने दिल की आतिशे-पिन्हां को[3] भड़काती हुई

खुद-ब-खुद रूठी हुई, बिफरी हुई, बिखरी हुई
शोरे-पैहम से[4] दिले-गेती को[5] धड़काती हुई

पुल पे दरिया के दमादम कौंदती ललकारती
अपनी इस तूफ़ान-अंगेज़ी पे इतराती हुई

पेश करती बीच नद्दी में चिराग़ां का[6] समां
साहिलों पर रेत के ज़र्रों को चमकाती हुई

मुंह में घुसती है सुरंगों के यकायक दौड़कर
दनदनाती, चीख़ती, चिंघाड़ती गाती हुई

आगे-आगे जुस्तजू-आमेज़[7] नज़रें डालती
शब के हैबतनाक[8] नज़्ज़ारों से घबराती हुई

एक मुजरिम की तरह सहमी हुई, सिमटी हुई
एक मुफ़लिस की तरह सर्दी में थर्राती हुई

तेज़ी-ए-रफ़्तार के सिक्के जमाती जा-ब-जा[9]
दश्तो-दर में[10] ज़िन्दगी की लहर दौड़ाती हुई

---

1. अमर संगीत 2. क्रोध या प्रकोप की स्थिति में 3. निहित ज्वाला को 4. निरंतर शोर से 5. संसार के हृदय को 6. दीपमाला का 7. जिज्ञासापूर्ण 8. भयानक 9. जगह-जगह 10. जंगलों और आबादियों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सफ़्हा-ए-दिल से[1] मिटाती अह्दे-माज़ी के[2] नुक़ूश[3]
हालो-मुस्तक़बिल के[4] दिलकश ख़्वाब दिखलाती हुई
डालती बेहिस चटानों पर हिक़ारत की नज़र
कोह पर हंसती फ़लक को[5] आंख दिखलाती हुई
दामने-तारीकी-ए-शब की[6] उड़ाती धज्जियां
क़स्रे-ज़ुलमत पर[7] मुसलसल तीर बरसाती हुई
ज़द में कोई चीज़ आ जाए तो उसको पीसकर
इर्तिक़ा ए- ज़िन्दगी के[8] राज़ बतलाती हुई
जो'म में[9] पेशानी-ए-सहरा पे[10] ठोकर मारती
फिर सुबक-रफ़्तारियों के[11] नाज़ दिखलाती हुई
एक सरकश फ़ौज की सूरत अ़लम[12] खोले हुए
एक तूफ़ानी गरज के साथ दर्राती हुई
हर क़दम पर तोप की-सी घन-गरज के साथ-साथ
गोलियों की सनसनाहट की सदा आती हुई
वो हवा में सैकड़ों जंगी दुहल[13] बजते हुए
वो बिगुल की जांफ़ज़ा आवाज़ लहराती हुई
अलग़रज़[14] उड़ती चली जाती है बेख़ौफ़ो-ख़तर
शायरे-आतिश-नफ़स का[15] ख़ून खौलाती हुई

---

1. हृदय-रूपी पृष्ठ पर से 2. भूतकाल के 3. चित्र 4. वर्तमान तथा भविष्य के 5. आकाश को 6. रात के अंधकार के आंचल की 7. अन्धकार के महल पर 8. जीवन के विकास के 9. गर्व में 10. मरुस्थल के माथे पर 11. मंद गति के 12. पताका 13. ढोल, नक़्क़ारे 14. तात्पर्य यह कि 15. अग्नि-भाषी कवि का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शौक़े-गुरेज़ां[1]

दैरो-का'बा[2] का मैं नहीं क़ाइल
दैरो-का'बा को आस्तां[3] न बना
मुझमें तू रूहे-सरमदी[4] मत फूंक
रौनक़े-बज़्मे-आरिफ़ां[5] न बना
दश्ते-ज़ुल्मात में[6] भटकने दे
मेरी राहों को कहकशां[7] न बना
इश्रते-जह्लो-तीरगी[8] मत छीन
महरमे-राज़े-दो-जहां[9] न बना
बिजलियों से जहां न हो चश्मक[10]
उस गुलिस्तां में आशियां न बना
मेरी जानिब निगाहे-लुत्फ़ न कर
ग़म को इस दर्जा कामरां[11] न बना
इस ज़मीं को ज़मीं ही रहने दे
इस ज़मीं को तू आस्मां न बना
राज़ तेरा छुपा नहीं सकता
मुझे तू अपना राज़दां न बना

---

1. विरक्ति की आकांक्षा 2. मन्दिर और का'बा (मस्जिद) 3. पूज्यनीय चौखट, दहलीज़ 4. अनश्वर आत्मा 5. ब्रह्मज्ञानियों की सभा की शोभा 6. अन्धकार (अज्ञान) के जंगल में 7. आकाश-गंगा 8. अज्ञानता का आनंद 9. दोनों लोकों के रहस्य का जानकार 10. लाग-डांट 11. सफल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इधर भी आ

ये जह्‌दो-कश्मकश[1], ये ख़ुरोशे-जहां[2] भी देख
इदबार की[3] सरों पे घनी बदलियां भी देख
ये तोप, ये तुफ़ंग, ये तेग़ो-सिनां[4] भी देख
ओ कुश्ता-ए-निगारे-दिल-आरा[5] इधर भी आ

आ और बिगुल का नग़मा-ए-जांआफ़री[6] भी सुन
आ बेकसों का नाला-ए-अंदोहगा[7] भी सुन
आ बाग़ियों का ज़मज़मा-ए-आतशीं[8] भी सुन
ओ मस्ते-साज़ो-बरबतो-नग़मा[9] इधर भी आ

तक़्‌दीर कुछ हो, काविशे-तद्‌बीर[10] भी तो है
तख़रीब के[11] लिबास में ता'मीर[12] भी तो है
ज़ुलमात के[13] हिजाब में[14] तन्वीर[15] भी तो है
आ मुन्तिज़र है इश्‌रते-फ़र्दा[16] इधर भी आ

---

1. पराक्रम और संघर्ष 2. संसार का कोलाहल 3. संकटों की 4. तलवार और तीर की नोक 5. हृदयाकर्षक प्रेयसी द्वारा आहत 6. जीवन-वर्धक गीत 7. आर्त्तनाद 8. अग्निमय गीत 9. साज़-संगीत में मस्त 10. उपाय-सम्बन्धी परिश्रम 11. विनाश के 12. निर्माण 13. अन्धकार के 14. पर्दे में 15. प्रकाश, ज्योति 16. आगामी कल का सुख-वैभव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेहमान

आज की रात और बाक़ी है
कल तो जाना ही है सफ़र पे मुझे
ज़िन्दगी मुन्तज़िर है मुंह फाड़े
ज़िन्दगी, ख़ाको-ख़ून में लथड़ी
आंख में शो'ला-हाय-तुंद[1] लिए
दो घड़ी ख़ुद को शादमां[2] कर लें
आज की रात और बाक़ी है

चलने ही को है इक समूम[3] अभी
रक़्स-फ़र्मा[4] है रूहे-बर्बादी[4]
बरबरीयत के[6] कारवानों से
ज़लज़ले में है सीना-ए-गेती[7]
ज़ौक़े-पिन्हां को[8] कामरां[9] कर लें
आज की रात और बाक़ी है

एक पैमाना-ए-मए-सरजोश[10]
लुत्फ़े-गुफ़्तार[11], गर्मी-ए-आग़ोश[12]
बोसे—इस दर्जा आतशीं बोसे[13]
फूंक डालें जो मेरी किश्ते-होश[14]
रूह यख़बस्ता[15] है तपां[16] कर लें
आज की रात और बाक़ी है

---

1. भड़कते शोले 2. आह्लादित 3. विषाक्त वायु 4. नृत्यशील 5. ध्वंस की आत्मा 6. बर्बरता के 7. संसार की छाती 8. निहित आकांक्षा को 9. सफल 10. तेज़ शराब का प्याला 11. वार्तालाप का आनंद 12. आलिंगन की गर्मी 13. अग्निमय (गरम) चुम्बन 14 चेतना की खेती 15. ठंडी, जमी हुई 16. गर्म

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक दो और साग़रे-सरशार[1]
फिर तो होना ही है मुझे हुशियार
छेड़ना ही है साज़े-ज़ीस्त[2] मुझे
आग बरसाएंगे लबे-गुफ़्तार[3]
कुछ तबीयत तो हम रवां कर लें
आज की रात और बाक़ी है
फिर कहां ये हसीं सुहानी रात
ये फ़राग़त[4], ये कैफ़ के[5] लम्हात[6]
कुछ तो आसूदगी-ए-ज़ौक़े-निहां[7]
कुछ तो तस्कीने-शोरिशे-जज़्बात[8]
आज की रात जाविदां[9] कर लें
आज की रात और आज की रात

---

1. शराब का लबालब भरा हुआ प्याला 2. जीवन-संगीत 3. बात करनेवाले होंठ 4. अवकाश 5. मादकता के 6. क्षण 7. निहित पिपासा की तृप्ति 8. अशांत मनोभावों की तुष्टि 9. शाश्वत, अमर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शह्रे-निगार[1]

रुख़सत ऐ हम-सफ़रो ! शह्रे-निगार आ ही गया
खुल्द[2] भी जिस पे हो क़ुर्बां वो दियार[3] आ ही गया

ये जुनूंज़ार[4] मिरा, मेरे ग़ज़ालों का[5] जहां
मेरा 'नज्द' आ ही गया, मेरा 'ततार' आ ही गया

गेसुओं वालों में, अबरू के[6] कमांदारों में
एक सैद[7] आ ही गया, एक शिकार आ ही गया

बाग़बानों को बताओ, गुलो-नसरीं से[8] कहो
इक ख़राबे-गुलो - नसरीने-बहार आ ही गया

ख़ैर-मक़दम को[9] मिरे कोई ब-हंगामे-सहर[10]
अपनी आंखों में लिए शब का ख़ुमार आ ही गया

ज़ुल्फ़ का[11] अब्रे-सियह[12] बाज़ुए-सीमीं पे[13] लिए
फिर कोई ज़मज़मए-साज़े-बहार[14] आ ही गया

हो गई तश्ना-लबी[15] आज रहीने-कौसर[16]
मेरे लब पर लबे-लालीने-निगार[17] आ ही गया

---

1. प्रेयसी का नगर 2. स्वर्ग 3. शहर, नगर 4. उन्माद-स्थल 5. मृग-नयनी सुंदरियों का 6. भृकुटी के 7. आखेट 8. फूलों से 9. स्वागत को 10. प्रातःकाल 11. केशों का 1.. काला बादल 13. रजत बांहों पर 14. वसंतरूपी साज को छेड़ता हुआ 15. तृष्णा 16. स्वर्ग की अमृत-नदी की कृतज्ञ 17. प्रेयसी के लाल होंठ

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुस्न-ओ-इश्क़

मुझसे मत पूछ 'मिरे हुस्न में क्या रक्खा है ?'
आंख से पर्दा-ए-ज़ुलमात[1] उठा रक्खा है
मेरी दुनिया कि मिरे ग़म से जहन्नुम-बरदोश[2]
तूने दुनिया को भी फ़िर्दौस[3] बना रक्खा है

मुझसे मत पूछ 'तिरे इश्क़ में क्या रक्खा है ?'
सोज़ को साज़ के पर्दे में छुपा रक्खा है
जगमगा उठती है दुनिया-ए-तख़ैयुल[4] जिससे
दिल में वो शो'ला-ए-जांसोज़[5] दबा रक्खा है

---

1. अंधेरों का पर्दा 2. कंधे पर नरक लिए (नरक-समान) 3. स्वर्ग 4. कल्पनाओं की दुनिया 5. जान को जला डालने वाला शो'ला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़िक्र

नहीं हरचंद किसी गुमशुदा जन्नत की तलाश
इक न इक ख़ुल्दे-तरबनाक का[1] अर्मां है ज़रूर
बज़्मे-दोशीना की[2] हसरत तो नहीं है मुझको
मेरी नज़रों में कोई और शबिस्तां[3] है ज़रूर
मिट के, बर्बादे-जहां होके, सभी कुछ खोके
बात क्या है किज़ियां का[4] कोई एहसास नहीं
कारफ़र्मा[5] है कोई ताज़ा जुनूने-ता'मीर[6]
दिले-मुज़्तर[7] अभी आमाजगहे-यास नहीं[8]
ताज़ा-दम भी हूं मगर फिर ये तक़ाज़ा क्यों है
हाथ रख दे मिरे माथे पे कोई ज़ोहरा-जबीं[9]
एक आग़ोशे-हसीं[10] शौक़ की[11] मे'राज[12] है क्या
क्या यही है असरे-नाला-ए-दिल-हाए-हज़ीं[13]
महवशों का[14] तरब-अंगेज़[15] तबस्सुम[16] क्या है
है तो सब कुछ ये मगर ख़्वाब-असर[17] क्यों हो जाए
हुस्न की जलवागहे-नाज़ का अफ़सूं[18] तसलीम[19]
यही क़ुर्बानगहे-अर्बाबे-नज़र[20] क्यों हो जाए

---

1. आनंदमय स्वर्ग का 2. पिछली रात वाली महफ़िल की 3. शयनागार 4. हानि का 5. काम करने वाला 6. निर्माणोन्माद 7. आतुर मन 8. निराशा के लक्षित चिह्न पर नहीं पहुंचा 9. सितारे जैसे (प्रकाशमान) माथे वाली (अलौकिक सुंदरी) 10. सुंदर गोद 11. इश्क़ की 12. पराकाष्ठा 13. शोकाकुल हृदय के आर्त्तनाद का असर 14. चांद-ऐसी सुंदरियों का 15. हर्षोत्पादक 16. मुस्कराहट 17. सपने का सा प्रभाव रखनेवाला 18. जादू 19. स्वीकार 20. पारखियों का बलि-घर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैंने सोचा था कि दुश्वार है मंज़िल अपनी
इक हसीं बाज़ुए-सीमीं[1] का सहारा भी तो हो
दश्ते-ज़ुल्मात से[2] आख़िर को गुज़रना है मुझे
कोई रुख़्शंदा-ओ-ताबिंदा[3] सितारा भी तो हो

आग को किसने गुलिस्तां न बनाना चाहा
जल बुझे कितने ख़लील[4], आग गुलिस्तां न बनी
टूट जाना दरे-ज़िंदां का[5] तो दुश्वार न था
ख़ुद-ज़ुलैख़ा[6] ही रफ़ीक़े-महे-किन्आं न बनी

ब-ईं इन्आमे-वफ़ा[7], उफ़ ये तक़ाज़ाए-ह्यात[8]
ज़िंदगी वक़्फ़े-ग़मे-ख़ाक-नशीनां[9] कर दे
ख़ूने-दिल की कोई क़ीमत जो नहीं है तो न हो
ख़ूने-दिल नज़्रे-चमनबंदी-ए-दौरां[10] कर दे

1. रजत बांह 2. अंधेरों के जंगल से 3. उज्ज्वल और प्रकाशमान 4. इब्राहीम (पैग़म्बर) 5. कारागार के दरवाज़े का 6. मिश्रदेश के बादशाह 'अज़ीज़' की स्त्री जो (सुंदरता के देवता) हज़रत यूसुफ़ पर मुग्ध हो गई थी 7. वफ़ा करने का यह पुरस्कार ८. जीवन की मांग 9. मनुष्य मात्र के दु:खों को समर्पित 10. संसार के सुंदर सुधार को समर्पण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझे जाना है इक दिन !

मुझे जाना है इक दिन बज़्मे-नाज़ से[1] आख़िर
अभी फिर दर्द टपकेगा मिरी आवाज़ से आख़िर
अभी फिर आग उट्ठेगी शिकस्ता[2] साज़ से आख़िर
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर

अभी तो हुस्न के पैरों पे है जब्रे-हिना-बंदी[3]
अभी है इश्क़ पर आईने-फ़र्सूदा को[4] पाबंदी
अभी हावी है अक़्लो-रूह पर झूटी ख़ुदावंदी
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर

अभी तह्ज़ीब अद्लो-हक़ की[5] कश्ती खे नहीं सकती
अभी ये ज़िन्दगी दादे-सदाक़त दे नहीं सकती[6]
अभी इन्सानियत दौलत से टक्कर ले नहीं सकती
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे - नाज़ से आख़िर

अभी तो कायनात[7] औहाम का[8] इक कारख़ाना है
अभी धोका हक़ीक़त[9] है, हक़ीक़त इक फ़साना है
अभी तो ज़िन्दगी को ज़िन्दगी करके दिखाना है
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर

---

1. नाज़ों भरी महफ़िल से 2. टूटे हुए 3. मेहंदी लगाने पर प्रतिबंध 4. जीर्ण व्यवस्था की 5. न्याय और सत्य की 6. सत्य की प्रशंसा नहीं कर सकती 7. ब्रह्माण्ड 8. भ्रमों का 9. वास्तविकता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभी हैं शहर की तारीक[1] गलियां मुन्तज़र मेरी
अभी है इक हसीं तहरीके-तूफ़ां[2] मुन्तज़र मेरी
अभी शायद है इक ज़ंजीरे-ज़िंदा[3] मुन्तज़र मेरी
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर

अभी तो फ़ाक़ाकश इन्सान से आंखें मिलाना है
अभी झुलसे हुए चेहरों पे अश्के-ख़ूं[4] बहाना है
अभी पामाले-जौर[5] आदम को[6] सीने से लगाना है
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर

अभी हर दुश्मने-नज़्मे-कुहन के[7] गीत गाना है
अभी हर लश्करे-ज़ुल्मत-शिकन के[8] गीत गाना है
अभी ख़ुद-सर फ़रोशाने-वतन के गीत गाना है
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर

कोई दम में हयाते-नौ का[9] फिर परचम[10] उठाता हूं
बाईमाए-हमीयत[11] जान की बाज़ी लगाता हूं
मैं जाऊंगा, मैं जाऊंगा, मैं जाता हूं, मैं जाता हूं
मुझे जाना है इक दिन, तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर

(1945)

---

1. अंधेरी 2. तूफ़ान (क्रांति) का आंदोलन 3. कारागार की ज़ंजीर 4. ख़ून के आंसू 5. अत्याचार-पीड़ित 6. मानव को 7. जीर्ण व्यवस्था के शत्रु के 8. अंधकार दूर करनेवाली सेना के 9. नव जीवन का 10. पताका 11. आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इश्रते-तन्हाई[1]

मैं कि मयख़ाना-ए-उल्फ़त का[2] पुराना मयख़्वार
महफ़िले-हुस्न का इक मुतरिबे-शीरीं-गुफ़्तार[3]
माहपारों का हदफ़ ज़ोहरा-जबीनों का शिकार[4]
नग़मा-पैरा-ओ-नवासंजो-ग़ज़लख़्वां हूं[5] मैं

कितने दिलकश हैं मिरे बुतख़ाना-ए-ईमां के सनम[6]
वो कलीसाओं के आहू[7] वो ग़ज़ालाने-हरम[8]
मैं हमा-शौक़ो-मोहब्बत[9], वो हमा-लुत्फ़ो-करम[10]
मरकज़े-मरहमते-महफ़िले-ख़ूबां[11] हूं मैं

मौजज़न[12] है मए-इश्‌रत[13] मिरे पैमानों में
यास का दर्द है कमतर मेरे अफ़सानों में
कामरानी[14] है परअफ़शां[15] मिरे रूमानों[16] में
यास की[17] सई-ए-जुनूंख़ेज़ पे ख़ंदां हूं[18] मैं

---

1. एकांत का सुख 2. प्रेम की मधुशाला का 3. मृदुभाषी गायक 4. चांद के टुकड़ों (सुंदरियों) का निशाना 5. गीत गा रहा हूं 6. मेरी मान्यता के मंदिर की मूर्तियां (सुंदरियां) 7. गिरजा-घरों के मृग (मृग-नयनी सुंदरियां) 8. काबे की चार-दीवारी (अंतःपुर) की मृगनयनी स्त्रियां 9. साकार प्रेम 10 साकार कृपा 11. सुंदरियों की महफ़िल की कृपाओं का केंद्र 12. तरंगित 13. सुख-रूपी मदिरा 14. सफलता 15. पंख फैलाए 16. प्रेम-कथाओं 17. निराशा की 18. उन्मादोत्पादक प्रयत्न पर हंसता हूं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरे अफ़कार में[1] मह्‌ताब की[2] तलअ़त[3] ग़लतां[4]
मेरी गुफ़तार में[5] है सुब्ह की नज़्हत[6] ग़लतां
मेरे अशआ़र में है फूलों की नकहत[7] ग़लतां
रूहे-गुलज़ार[8] हूं मैं जाने-गुलिस्तां हूं मैं

लाख मजबूर हूं मैं ज़ौक़े-खुद-आराई से[9]
दिल है बेज़ार अब इस इश्‌रते-तन्‌हाई से
आंख मजबूर नहीं है मिरी बीनाई से[10]
महरमे - दर्दो ग़मे - आलमे - इन्सां[11] हूं मैं

क्यों न चाहूं कि हर इक हाथ में पैमाना हो
यासो - महरूमी - ओ - मजबूरी इक अफ़साना हो
आ़म अब फ़ैज़े-मए-ओ-साक़ी-ओ-मयख़ाना हो
रिंद हूं और जिगर - गोशा - ए - रिंदां[12] हूं मैं

अब ये अर्मां कि बदल जाए जहां का दस्तूर
एक - इक आंख में हो ऐशो - फ़राग़त का[13] सरूर
एक-इक जिस्म पे हो अतलसो-कमख़्वाबो-समूर
अब ये बात और है खुद चाक-गरेबां[14] हूं मैं

(1943)

---

1. रचनाओं में 2. चांद की 3. रूप 4. डूबी (घुली) हुई 5. बात-चीत में 6. पवित्रता 7. सुगंध 8. बाग़ की आत्मा 9. आत्म-सज्जा की प्रवृत्ति से 10. ज्योति से 11. मनुष्य के दुःख-दर्द का मर्मज्ञ 12. मद्यपों के हृदय का टुकड़ा 13. ऐश्वर्य एवं सुख का 14. फटे दामन वाला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नौजवान ख़ातून से

हिजाबे-फ़ित्ना-परवर[1] अब उठा लेती तो अच्छा था
ख़ुद अपने हुस्न को पर्दा बना लेती तो अच्छा था
तिरी नीची नज़र ख़ुद तेरी इस्मत की मुहाफ़िज़ है
तू इस नश्तर की तेज़ी आज़मा लेती तो अच्छा था

तिरी चीने-जबीं[2] ख़ुद इक सज़ा क़ानूने-फ़ितरत में
इसी शमशीर से कारे-सज़ा[3] लेती तो अच्छा था
ये तेरा ज़र्द रुख़[4], ये ख़ुश्क लब, ये वहम, ये वहशत
तू अपने सर से ये बादल हटा लेती तो अच्छा था

दिले-मजरूह को[5] मजरूहतर करने से क्या हासिल
तू आंसू पोंछकर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था
अगर ख़लवत में[6] तूने सर उठाया भी तो क्या हासिल
भरी महफ़िल में आकर सर झुका लेती तो अच्छा था

तिरे माथे का टीका मर्द की क़िस्मत का तारा है
अगर तू साज़े-बेदारी[7] उठा लेती तो अच्छा था
सिनानें[8] खेंच ली हैं सर-फिरे बाग़ी जवानों ने
तू सामाने-जराहत[9] अब उठा लेती तो अच्छा था

तिरे माथे पे ये आंचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन
तू इस आंचल से इक परचम[10] बना लेती तो अच्छा था
(1937)

1. उपद्रवकर्ता पर्दा 2. माथे का बल 3. दण्ड देने का कार्य 4. पीला मुखड़ा 5. घायल हृदय को 6. एकांत में 7. जागरण का साज़ 8. भाले 9. शल्य-चिकित्सा-सम्बन्धी सामग्री 10. पताका

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिल्ली से वापसी

रुख़सत ऐ दिल्ली तिरी महफ़िल से अब जाता हूं मैं
नौहागर[1] जाता हूं मैं, नाला-ब-लब[2] जाता हूं मैं

याद आएंगे मुझे तेरे ज़मीनो-आस्मां
रह चुके हैं मेरी जौलांगाह[3] तेरे बोस्तां[4]

तेरा दिल धड़का चुके हैं मेरे एहसासात भी
तेरे ऐवानों में[5] गूंजे हैं मिरे नग़मात भी

रश्के-शीराज़े-कुहन[6], हिन्दोस्तां की आबरू
सरज़मीने-हुस्नो-मौसीक़ी[7], बहिश्ते-रंगों-बू[8]

मा'बदे-हुस्नो-मोहब्बत[9] बारगाहे-सोज़ो-साज़[10]
तेरे बुतख़ाने हसीं, तेरा कलीसा दिलनवाज़

ज़िक्र यूसुफ़ का तो क्या कीजै तिरी सरकार में
ख़ुद ज़ुलैख़ा आके बिकती है तिरे बाज़ार में

जन्नतें आबाद हैं तेरे दरो-दीवार में
और तू आबाद ख़ुद शायर के क़ल्बे-ज़ार में[11]

महफ़िले-साक़ी सलामत ! बज़्मे-अंजुम[12] बरक़रार
नाज़नीनाने-हरम पर[13] रहमते - पर्वर्दिगार[14]

---

1. विलाप करते हुए 2. होंठों पर आर्त्तनाद लिए हुए 3. दौड़ का मैदान (क्रीड़ा-स्थल) 4. उपवन 5. महलों में 6. प्राचीन फ़ारस देश की ईर्ष्या 7. सौंददर्य तथा संगीत की धरती 8. रंग तथा सुगंध का स्वर्ग 9. सौन्दर्य तथा प्रेम का आराधना-स्थल 10. सोज़ और साज़ की राज-सभा 11. क्षीण हृदय में 12. सितारों (सुन्दरियों) की सभा 13. अन्तःपुर की सुन्दरियों पर 14. भगवान् की कृपा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

याद आएगी मुझे बेतरह याद आएगी तू
ऐन वक़्ते-मैकशी[1] आंखों में फिर जाएगी तू

क्या कहूं किस शौक़ से आया था तेरी बज़्म में
छोड़कर ख़ुल्दे-अलीगढ़[2] की हज़ारों महफ़िलें

कितने रंगीं अहदो-पैमां[3] तोड़कर आया था मैं
दिल-नवाज़ाने-चमन को छोड़कर आया था मैं

इक निशेमन[4] मैंने छोड़ा, इक निशेमन छुट गया
साज़ बस छेड़ा ही था मैंने कि गुलशन छुट गया

दिल में सोज़े-ग़म की इक दुनिया लिए जाता हूं मैं
आह तेरे मयकदे से बे-पिए जाता हूं मैं

जाते-जाते लेकिन इक पैमां[5] किए जाता हूं मैं
अपने अज़्मे-सरफ़रोशी की[6] क़सम खाता हूं मैं

फिर तिरी बज़्मे-हसीं में लौटकर आऊंगा मैं
आऊंगा मैं और बाअन्दाज़े-दिगर[7] आऊंगा मैं

ओह वो चक्कर दिए हैं गर्दिशे-अय्याम ने[8]
खोलकर रख दी हैं आंखें तल्ख़ी-ए-आलाम ने[9]

फ़ितरते-दिल दुश्मने-नग़मा हुई जाती है अब
ज़िन्दगी इक बर्क़[10] इक शो'ला हुई जाती है अब

सिर से पा तक[11] एक ख़ूनी राग बनकर आऊंगा
लालाज़ारे-रंगो-बू में[12] आग बनकर आऊंगा

---

1. शराब पीते समय 2. अलीगढ़ का स्वर्ग 3. रंगीन वचन 4. घोंसला नीड़ 5. प्रतिज्ञा 6. जान पर खेल जाने के संकल्प की 7. अन्य ढंग से 8. कालचक्र ने 9. दुःखों की कटुता ने 10. बिजली 11. सिर से पैर तक 12. रंग और सुगंध के उपवन में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एतिराफ़

अब मिरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो !
मैंने माना कि तुम इक पैकरे-रा'नाई[1] हो
चमने-दहर में[2] रूहे-चमन-आराई[3] हो
तलअ़ते-मेह्र[4] हो, फ़िर्दौस की[5] बरनाई[6] हो
बिन्ते-महताब[7] हो गर्दूं से[8] उतर आई हो

मुझसे मिलने में अब अंदेशा-ए-रुसवाई है
मैंने खुद अपने किए की ये सज़ा पाई है

ख़ाक में आह मिलाई है जवानी मैंने
शो'लाज़ारों में जलाई है जवानी मैंने
शहरे-ख़ूबां में[9] गंवाई है जवानी मैंने
ख्वाबगाहों में जगाई है जवानी मैंने

हुस्न ने जब भी इनायत की नज़र डाली है
मेरे पैमाने-मोहब्बत ने[10] सिपर[11] डाली है

उन दिनों मुझ पे क़ियामत का जुनूं[12] तारी था
सर पे सरशारी-ए-इश्रत का[13] जुनूं तारी था
महापारों से[14] मोहब्बत का जुनूं तारी था
शहरयारों से[15] रक़ाबत[16] का जुनूं तारी था

बिस्तरे-मख़मलो-संजाब थी दुनिया मेरी
एक रंगीनो-हसीं ख्वाब थी दुनिया मेरी

---

1. साकार सौन्दर्य 2. संसार-रूपी वाटिका में 3. वाटिका को सजाने-वाली आत्मा 4. सूर्य की चमक 5. स्वर्ग की 6. जवानी 7. चांद की बेटी 8. आकाश से 9. सुन्दरियों के नगर में 10. प्रेम-प्रतिज्ञा ने 11. ढाल (हथियार) 12. गज़ब का उन्माद 13. सुख-भोग का 14. चांद के टुकड़ों (सुन्दरियों) से 15. शहर के मालिकों से 16. प्रतिद्वन्द्विता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जन्नते-शौक़[1] थी बेगाना-ए-आफ़ाते-समूम[2]
दर्द जब दर्द न हो, काविशे-दरमां[3] मालूम
ख़ाक थे दीदा-ए-बेबाक में[4] गर्दूं के नुजूम[5]
बज़्मे-परवीं[6] थी निगाहों में कनीज़ों का[7] हुजूम

लैला-ए-नाज़-बर-अफ़गंदा निक़ाब[8] आती है
अपनी आंखों में लिए दावते-ख़्वाब[9] आती है

संग को[10] गौहरे-नायाबो-गिरां[11] जाना था
दश्ते-पुरख़ार को[12] फ़िर्दौसे-जवां[13] जाना था
रेग को[14] सिलसिला-ए-आबे-रवां[15] जाना था
आह ये राज़ अभी मैंने कहां जाना था

मेरी हर फ़तह में है एक हज़ीमत[16] पिनहां[17]
हर मसर्रत में है राज़े-ग़मो-हसरत पिन्हां

क्या सुनोगी मिरी मजरूह जवानी की पुकार
मेरी फ़रियादे-जिगरदोज़[18] मिरा नाला-ए-ज़ार[19]
शिद्दते - कर्ब में[20] डूबी हुई मेरी गुफ़्तार[21]
मैं कि ख़ुद अपने मज़ाके-तरब-आगीं का[22] शिकार

---

1. प्रेम का स्वर्ग 2. विषाक्त वायु की विपत्तियों से अपरिचित 3. उपचार का प्रयत्न 4. निडर आंखों में 5. आकाश के नक्षत्र 6. सितारों ऐसी सुन्दर सुकुमारियों की सभा 7. दासियों का 8. चेहरे पर निक़ाब डाले हुए रात 9. नींद का निमंत्रण 18 पत्थर को 11. अलभ्य तथा अमूल्य मोती 12. कांटों भरे जंगलों को 13. युवा स्वर्ग 14. रेत को 15. बहते जल का सिलसिला 16. पराजय 17. निहित 18. दिल तोड़नेवाली फ़रियाद 19. दुःख-भरा आर्त्तनाद 20. उत्कट पीड़ा में 21. बातचीत 22. प्रसन्न-हृदयता की अभिरुचि का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वो गुदाज़े-दिले-मरहूम[1] कहां से लाऊं
अब मैं वो जज़्बा-ए-मासूम[2] कहां से लाऊं

मेरे साए से डरो, तुम मिरी क़ुर्बत[3] से डरो
अपनी जुरंत की क़सम अब मेरी जुरंत से डरो
तुम लताफ़त[4] हो अगर मेरी लताफ़त से डरो
मेरे वादों से डरो, मेरी मोहब्बत से डरो

अब मैं अल्ताफ़ो-इनायत का[5] सज़ावार नहीं
मैं वफ़ादार नहीं, हां मैं वफ़ादार नहीं
अब मिरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो!

नन्ही पुजारिन

इक नन्ही-मुन्नी सी पुजारिन
पतली बांहें, पतली गरदन

भोर भये मन्दिर आई है
आई नहीं है मां लाई है

वक़्त से पहले जाग उठी है
नींद अभी आंखों में भरी है

ठोड़ी तक लट आई हुई है
यूंही सी लहराई हुई है

---

1. मृत-हृदय की मृदुलता 2. सरल भावना 3. सामीप्य 4. माधुर्य
5. कृपाओं का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आंखों में तारों की चमक है
मुखड़े पर चांदी की झलक है
कैसी सुन्दर है क्या कहिए
नन्ही सी इक सीता कहिए
धूप चढ़े तारा चमका है
पत्थर पर इक फूल खिला है
चांद का टुकड़ा, फूल की डाली
कमसिन, सीधी, भोली-भाली
कान में चांदी की बाली है
हाथ में पीतल की थाली है
दिल में लेकिन ध्यान नहीं है
पूजा का कुछ ज्ञान नहीं है
कैसी भोली और सीधी है
मन्दिर की छत देख रही है
मां बढ़कर चुटकी लेती है
चुपके-चुपके हंस देती है
हंसना रोना उसका मज़हब
उसको पूजा से क्या मतलब
खुद तो आई है मन्दिर में
मन उसका है गुड़िया-घर में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकवा-ए-मुख्तसर[1]

मुझे शिकवा नहीं दुनियां की उन ज़ोहरा जबीनों से[2]
हुई है जिन से मेरे शौक़े-रुसवा की[3] पज़ीराई[4]

मुझे शिकवा नहीं उन पाक-बातिन[5] नुक्ताचीनों से[6]
लबे-मौज्ज़िनुमा ने[7] जिनके मुझ पर आग बरसाई

मुझे शिकवा नही तहज़ीब के उन पासबानों से[8]
न लेने दी जिन्होंने फितरते-शायर को[9] अंगड़ाई

मुझे शिकवा नहीं दैरो-हरम के[10] आस्तानों से[11]
वो, जिनके दर पे[12] की है मुद्दतों मैंने जबीं साई[13]

मुझे शिकवा नहीं उफ़्तादग़ाने-ऐशो-इश्रत से[14]
वो, जिनको मेरे हाले-ज़ार पर[15] अकसर हंसी आई

मुझे शिकवा नहीं उन साहबाने-जाहो-सरवत से[16]
नहीं आई मिरे हिस्से में जिनकी एक भी पाई

ज़माने के निज़ामे-ज़ंग-आलूदा से[17] शिकवा है
क्वानीने-कुहन[18], आईने-फ़र्सूदा से[19] शिकवा है

---

1. संक्षिप्त शिकायत 2. सुन्दरियों से 3. बदनाम इश्क़ की 4. अंगीकृति 5. शुद्ध हृदय 6. आलोचकों से 7. बुद्धि को आश्चर्य में डालने वाले होंठों (ज़बान) ने 8. रक्षकों से 9. कवि के स्वभाव या प्रकृति को 10. मन्दिर-मस्जिद के 11. चौखटों से 12 दरवाज़े पर 13. माथा रगड़ा 14. सुख-वैभव भोगने वालों से 15. दरिद्र दशा पर 16. धनवानों से 17. जंग लगी व्यवस्था से 18, 19. पुराने और जर्जर नियमों तथा व्यवस्था से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग़ज़लें

कुछ तझको ख़बर है हम क्या-क्या, ए शोरिशे-दौरां[1] भूल गए
वो ज़ुल्फ़े-परीशां[2] भूल गए, वो दीदा-ए-गिरियां[3] भूल गए
ऐ शौक़े-नज़ारा[4] क्या कहिये, नज़रों में कोई सूरत ही नहीं
ऐ ज़ौक़े-तसव्वुर[5] क्या कीजै, हम सूरते-जानां[6] भूल गए
अब गुलसे नज़र मिलती ही नहीं, अब दिल की कली खिलतीही नहीं
ऐ फ़स्ले-बहारां[7] रुख़सत हो, हम लुत्फ़े-बहारां भूल गए
सब का तो मुदावा[8] कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके
सब के तो गरेबां सी डाले, अपना ही गरेबां भूल गए
ये अपनी वफ़ा का आलम है, अब उनकी जफ़ा को क्या कहिए
इक नश्तरे-ज़ह्‌र-आगीं[9] रखकर नज़दीके-रगे-जां[10] भूल गए

० ० ०

कमाले-इश्क़[11] है दीवना हो गया हूं मैं
ये किसके हाथ से दामन छुड़ा रहा हूं मैं
तुम्हीं तो हो जिसे कहती है नाख़ुदा[12] दुनिया
बचा सको तो बचा लो, कि डूबता हूं मैं
ये मेरे इश्क़ की मजबूरियां मआज़-अल्लाह[13]
तुम्हारा राज़ तुम्हीं से छुपा रहा हूं मैं

---

1. संसार के उपद्रव 2. बिखरे केश 3. रोती आंखें 4. देखने की चाह 5. कल्पना की प्रवृत्ति 6. प्रेयसी की शक्ल 7. बसन्त ऋतु 8. उपचार 9. विष में बुझा हुआ नश्तर 10. शहरग के निकट 11. इश्क़ का चमत्कार 12. नाविक 13. ख़ुदा की पनाह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस इक हिजाब पे[1] सौ बेहिजाबियां सदक़े
जहां से चाहता हूं तुमको देखता हूं मैं
बताने वाले वहीं पर बताते हैं मंज़िल
हज़ार बार जहां से गुज़र चुका हूं मैं
कभी ये ज़ो'म[2] कि तू मुझसे छुप नहीं सकता
कभी ये वहम कि खुद भी छुपा हुआ हूं मैं
मुझे सुने न कोई मस्ते-बादा-ए-इश्रत[3]
'मजाज़' टूटे हुए दिल की इक सदा[4] हूं मैं

° ° °

सारा आ़लम गोश-बर-आवाज़ है[5]
आज किन हाथों में दिल का साज़ है
हां ज़रा जुर्रत दिखा ऐ जज़्बे-दिल
हुस्न को पर्दे पे अपने नाज़ है
हमनशीं दिल की हक़ीक़त क्या कहूं
सोज़ में डूबा हुआ इक साज़ है
आपकी मख्मूर आंखों की क़सम
मेरी मय-ख्वारी[6] अभी तक राज़ है
हंस दिए वो मेरे रोने पर मगर
उनके हंस देने में भी इक राज़ है

1. पर्दे पर 2. घमंड 3. सुख-रूपी शराब द्वारा मस्त 4. आवाज़
5. पूरा संसार आवाज़ पर कान लगाए है 6. मदिरापान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छुप गए वो साज़-हस्ती[1] छेड़ कर
अब तो बस आवाज़ ही आवाज़ है
हुस्न को नाहक़[2] पशेमां[3] कर दिया
ऐ जुनूं[4] ये भी कोई अंदाज़ है
सारी महफ़िल जिसपे झूमउट्ठी 'मजाज़'
वो तो आवाज़े-शिकस्ते-साज़[5] है

० ० ०

वो निक़ाब आप से उठ जाए तो कुछ दूर नहीं
वर्ना मेरी निगाहे-शौक़[6] भी मजबूर नहीं
ख़ातिरे-अहले-नज़र[7] हुस्न को मन्ज़ूर नहीं
इसमें कुछ तेरी ख़ता दीदा-ए-महजूर[8] नहीं
लाख छुपते हो मगर छुपके भी मस्तूर[9] नहीं
तुम अजब चीज़ हो, नज़दीक नहीं, दूर नहीं
जुर्रते-अर्ज़ पे[10] वो कुछ नहीं कहते लेकिन
हर अदा से ये टपकता है कि मन्ज़ूर नहीं
दिल धड़क उठता है ख़ुद अपनी ही आहट पर
अब क़दम मंज़िले-जानां[11] से बहुत दूर नहीं
हाय वो वक़्त कि जब बे-पिये मदहोशी थी
हाय ये वक़्त कि अब पीके भी मख़्मूर नहीं

---

1. जीवन-संगीत 2. व्यर्थ 3. लज्जित 4. उन्माद 5. साज़ के टूटने की आवाज़ 6. इच्छुक निगाह 7. पारखी जनों का दिल रखना 8. वियोगग्रस्त आंख 9. छुपे हुए 10. निवेदन के साहस पर 11. प्रेयसी तक पहुंचने की मंज़िल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त उठाता हूं नज़र
अब यहां तूर नहीं, बर्क़[1] सरे-तूर[2] नहीं
देख सकता हूं जो आंखों से वो काफ़ी है 'मजाज़'
अहले-इर्फ़ां की[3] नवाज़िश मुझे मन्जूर नहीं

० ० ०

निगाहे-लुत्फ़[4] मत उठ, ख़ूगरे-आलाम[5] रहने दे
हमें नाकाम रहना है, हमें नाकाम रहने दे
किसी मासूम पर बेदाद[6] का इल्ज़ाम क्या मानी
ये वहशतख़ेज़ बातें इश्क़े-बद-अंजाम[7] रहने दे
अभी रहने दे दिल में शौक़े-शोरीदा के[8] हंगामे
अभी सर में मोहब्बत का जुनूने-ख़ाम[9] रहने दे
अभी रहने दे कुछ दिन लुत्फ़े-नग़मा, मस्ती-ए-सहबा[10]
अभी ये साज़ रहने दे, अभी ये जाम रहने दे
कहां तक हुस्न भी आख़िर करे पासे-रवादारी[11]
अगर ये इश्क़ ख़ुद ही फ़र्क़े-ख़ासो-आम[12] रहने दे
ब-ई-रिंदी[13] 'मजाज़' इक शायरे-मज़दूरो-दहक़ां[14] है
अगर शहरों में वो बदनाम है बदनाम रहने दे

० ० ०

---

1. बिजली 2. तूर नामक पहाड़ की चोटी पर (जहां हज़रत मूसा ने ख़ुदा से बातें की थीं) 3. ब्रह्मज्ञानियों की 4. कृपादृष्टि 5. दुःखों का अभ्यस्त 6. अत्याचार 7. बुरे परिणाम वाले प्रेम 8. परेशानियों की इच्छा के 9. अपक्व उन्माद 10 शराब की मस्ती 11. रवादारी का लिहाज़ 12. विशेष और साधारण का भेद 13. ऐसा मद्यप होने पर भी 14. मज़दूरों और किसानों का कवि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सीने में उनके जलवे छुपाए हुए तो हैं
हम अपने दिल को तूर बनाए हुए तो हैं
तासीरे-जज़्बे-शौक़[1] दिखाए हुए तो हैं
हम तेरा हर हिजाब[2] उठाए हुए तो हैं
हां, क्या हुआ वो हौसला-ए-दीद[3] अहले-दिल[4]
देखो ना वो निक़ाब उठाए हुए तो हैं
तेरे गुनाहगार, गुनाहगार ही सही
तेरे करम की[5] आस लगाए हुए तो हैं
अल्लाह री कामियाबी-ए-आवारगाने-इश्क़[6]
ख़ुद गुम हुए तो क्या; उसे पाए हुए तो हैं
यूं तुझको इख्तियार है तासीर[7] दे न दे
दस्ते-दुआ[8] हम आज उठाए हुए तो हैं
मिटते हुओं को देखके क्यों रो न दें 'मजाज़'
आखिर किसी के हम भी मिटाए हुए तो हैं

o o o

ख़ुद दिल में रहके आंख से पर्दा करे कोई
हां लुत्फ़ जब है पाके भी ढूंडा करे कोई
तुमने तो हुक्मे-तर्के-तमन्ना[9] सुना दिया
किस दिल से आह तर्के-तमन्ना करे कोई
दुनिया लरज़ गई दिले-हिर्मां-नसीब की[10]
इस तरह साज़े-ऐश न छेड़ा करे कोई

---

1. इश्क़ भावना की प्रभाव 2. पर्दा 3. देखने का साहस 4. दिलवालो (आशिक़ो) 5. कृपा की 6. इश्क़ के आवारों की सफलता 7. फल 8. प्रार्थना के (लिए) हाथ 9. इश्क़ तज देने का हुक्म 10. निराश मन की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझको ये आज़ू वो उठाएं निक़ाब ख़ुद
उनको ये इन्तिज़ार तक़ाज़ा करे कोई
रंगीनी-ए-निक़ाब में गुम हो गई नज़र
क्या बेहिजाबियों का[1] तक़ाज़ा करे कोई
या तो किसी को जुर्रते-दीदार[2] ही न हो
या फिर मिरी निगाह से देखा करे कोई
होती है इस में हुस्न की तौहीन ऐ 'मजाज़'
इतना न अह्ले-इश्क़ को[3] रुसवा करे कोई

० ० ०

हुस्न फिर फ़ित्नागर[4] है क्या कहिये
दिल की जानिब नज़र है क्या कहिये
फिर वही रहगुज़र है, क्या कहिये
ज़िंदगी राह पर है, क्या कहिये
हुस्न ख़ुद पर्दा-दर[5] है, क्या कहिये
ये हमारी नज़र है, क्या कहिये
आह तो बे-असर थी बरसों से
नग़्मा भी बे-असर हैं, क्या कहिये
हुस्न है अब न हुस्न के जल्वे
अब नज़र ही नज़र है, क्या कहिये
आज भी है 'मजाज़' ख़ाक-नशीं[6]
और नज़र अर्श पर[7] है, क्या कहिये

० ० ०

---

1. बेपर्दगियों का 2. दर्शनों का साहस 3. प्रेमीजनों को 4. उपद्रव-शील 5. पर्दा उठाए हुए 6. धरती पर रहने वाला 7. आकाश पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बर्बादि-तमन्ना पे इताब[1] और ज़ियादा
हां मेरी मोहब्बत का जवाब और ज़ियादा
रोएं न अभी अहले-नज़र[2] हाल पे मेरे
होना है अभी मुझको ख़राब और ज़ियादा
'आवारा-ओ-मजनूं' ही पे मौक़ूफ़[3] नही कुछ
मिलने हैं अभी मुझको ख़िताब और ज़ियादा
उट्ठेंगे अभी और भी तूफ़ां मिरे दिल से
देखूंगा अभी इश्क़ के ख़्वाब और ज़ियादा
टपकेगा लहू और मिरे दीदा-ए-तर से[4]
धड़केगा दिले-ख़ाना-ख़राब और ज़ियादा
होगी मिरी बातों से उन्हें और भी हैरत
आएगा उन्हें मुझसे हिजाब[5] और ज़ियादा
ऐ मुत्‌रिबे-बेबाक[6] कोई और भी नग़मा
ऐ साक़ी-ए-फ़य्याज़[7] शराब और ज़ियादा

o o o

इज़्ने-ख़िराम[8] लेते हुए आस्मां से[9] हम
हटकर चले हैं रहगुज़रे-कारवां से[10] हम
क्योंकर हुआ है फ़ाश[11] ज़माने पे क्या कहें
वो राज़े-दिल जो कह न सके राज़दां से[12] हम
हमदम यही है रहगुज़रे-यारे-ख़ुश-ख़िराम[13]
गुज़रे हैं लाख बार इसी कहकशां से[14] हम

---

1. कोप 2. नज़र रखने वाले (पारखी) 3. समाप्त या बस 4. सजल नेत्रों से 5. लज्जा 6. मुक्तकंठ गायक 7. उदार साक़ी 8. धीमी चाल से चलने का आदेश 9. भाग्य से 10. कारवान के रास्ते से 11. प्रकट 12. भेदी से 13. सुन्दर चाल से चलने वाले यार (प्रेयसी) का मार्ग 14. आकाशगंगा से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्या-क्या हुआ है हमसे जुनूं में[1] न पूछिए
उलझे कभी ज़मीं से कभी आस्मां से हम
ठुकरा दिए हैं अक़्लो-ख़िरद के[2] सनमकदे[3]
घबरा चुके थे कश्मकशे-इम्तिहां से हम
बख़्शी हैं हमको इश्क़ ने वो जुर्रतें 'मजाज़'
डरते नहीं सियासते-अहले-जहां से[4] हम

० ० ०

साज़गार[5] है हमदम[6] इन दिनों जहां अपना
इश्क़ शादमां[7] अपना, शौक़[8] कामरां[9] अपना
आह बेअसर किसकी, नाला[10] नारसा[11] किसका
काम बारहा आया जज़्बा-ए-निहां[12] अपना
कब किया था इस दिल पर हुस्न ने करम[13] इतना
मेह्रबान इस दर्जा, कब था आस्मां अपना
उलझनों से घबराए, मयकदे में दर आए[14]
किस क़दर तन-आसां[15] है ज़ौक़े-रायगां[16] अपना
इश्क़ और रुसवाई कौन-सी नई शै है
इश्क़ तो अज़ल से[17] था रुसवाए-जहां अपना
तुम 'मजाज़' दीवाने मसलहत से बेगाने[18]
वर्ना हम बना लेते तुमको राजदां[19] अपना

० ० ०

1. उन्माद में 2. बुद्धि और होश के 3. मन्दिर 4. संस्वर वालों की राजनीति से 5. अनुकूल 6. साथी 7. इश्क़ 8. आल्हादित 9. सफल 10. आर्त्तनाद 11. न पहुंचने वाला 12. निहित भावना 13. कृपा 14. आ गए 15. आलसी 16. व्यर्थ का शौक़ या इश्क़ 17. आदिकाल से 18. हित से अपरिचित 19. भेदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शौक़ के[1] हाथों ऐ दिले-मुज़्तर[2] क्या होना है क्या होगा
इश्क़ तो रुसवा हो ही चुका है, हुस्न भी क्या रुसवा होगा

हुस्न की बज़्मे-ख़ास में जाकर इससे ज़ियादा क्या होगा
कोई नया पैमां[3] बांधेंगे, क़ोई नया वादा होगा

चारागरी[4] सर आंखों पर इस चारागारी से क्या होगा
दर्द कि अपनी आप दवा है, तुम से अच्छा क्या होगा

वाइज़े-सादालौह से[5] कह दो छोड़ उक़्बा की[6] बातें
इस दुनिया में क्या रक्खा है, उस दुनिया में क्या होगा

तुमभी 'मजाज़' इन्सानहो आख़िर लाख छुपाओ इश्क़ अपना
ये भेद मगर खुल जाएगा, ये राज़ मगर अफ़शा[7] होगा

° ° °

नहीं ये फ़िक्र कोई रहबरे-कामिल[8] नहीं मिलता
कोई दुनिया में मानूसे-मिज़ाजे-दिल[9] नहीं मिलता

कभी साहिल पे रहकर शौक़ तूफ़ानों से टकराएं
कभी तूफ़ां में रहकर फ़िक्र है साहिल नहीं मिलता

ये आना कोई आना है कि बस रस्मन चले आए
ये मिलना ख़ाक मिलना है कि दिल से दिल नहीं मिलता

शिकस्ता-पा को[10] मुज़्दा,[11] ख़स्तगाने-राह को[12] मुज़्दा
कि रहबर[13] को सुराग़े-जादा-ए-मंज़िल[14] नहीं मिलता

---

1. इश्क़ के 2. आतुर मन 3. प्रतिज्ञा 4. उपचार 5. सरल स्वभाव धर्मोपदेशक से 6. परलोक की 7. प्रकट 8. सिद्ध पथ-प्रदर्शक 9. स्वभाव से परिचित (मित्र) 10. शिथिल जनों को 11. मंगल समाचार 12 रास्ते के थके हुओं को 13. पथ-प्रदर्शक 14. मंज़िल के मार्ग का पता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वहां कितनों को तख़्तो-ताज का अर्मां है क्या कहिये
जहां साइल[1] को अक्सर कासा-ए-साइल[2] नहीं मिलता

ये क़त्ले-आम और बे-इज़्न क़त्ले-आम[3] क्या कहिये
ये बिस्मिल[4] कैसे बिस्मिल हैं जिन्हें क़ातिल नहीं मिलता

° ° °

जुनूने-शौक़[5] अब भी कम नहीं है
मगर वो आज भी बरहम नहीं है

बहुत मुश्किल है दुनिया का संवरना
तिरी ज़ुल्फ़ों का पेचो-ख़म नहीं है

बहुत कुछ और भी है इस जहां में
ये दुनिया महज़ ग़म ही ग़म नहीं है

तक़ाज़े क्यों करूं पैहम[6] न साक़ी
किसे यां फ़िक्रे-बेशो-कम[7] नहीं है

उधर मशक़ूक[8] है मेरी सदाक़त[9]
इधर भी बदगुमानी कम नहीं हैं

मिरी बर्बादियों का हम-नशीनो[10]
तुम्हें क्या ख़ुद मुझे भी ग़म नहीं है

अभी बज़्मे-तरब से[11] क्या उठूं मैं
अभी तो आंख भी पुरनम[12] नहीं है

---

1. भिखारी 2. भिक्षा-पात्र 3. निर्देश बिना सर्व-संहार 4. आहत 5. इश्क़ का उन्माद 6. निरन्तर 7. अधिक और कम की चिन्ता 8. संदिग्ध 9. सच्चाई, वास्तविकता 10. साथियो 11. ख़ुशी की महफ़िल से 12. सजल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब-ईं सैले - ग़मो - सैले- हवादिस[1]
मिरा सर है कि अब भी ख़म नहीं है
'मजाज़' इक बादाकश[2] तो है यक़ीनन
जो हम सुनते थे वो आ़लम[3] नहीं है

० ० ०

जिगर और दिल को बचाना भी है
नज़र आप ही से मिलाना भी है
मोहब्बत का हर भेद पाना भी है
मगर अपना दामन बचाना भी है
जो दिल तेरे ग़म का निशाना भी है
क़तीले - जफ़ाए - ज़माना[4] भी है
ख़िरद की[5] इताअ़त[6] ज़रूरी सही
यही तो जुनूं[7] का ज़माना भी है
ये दुनिया, ये उक्बा[8] कहां जाइये
कहीं अहले - दिल का[9] ठिकाना भी
मुझे आज साहिल पे रोने भी दो
कि तूफ़ान में मुस्कराना भी है
ज़माने से आगे तो बढ़िये 'मजाज़'
ज़माने को आगे बढ़ाना भी है

० ० ०

1. चिंताओं तथा दुर्घटनाओं की बाढ़ के बावजूद 2. शराबी 3. हालत
4. संसार के अत्याचारों का मारा हुआ 5. बुद्धि की 6. आज्ञा-पालन
7. उन्माद 8. परलोक 9. दिलवालों (आशिक़ों) का

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दामने-दिल पे[1] नहीं बारिशे-इल्हाम[2] अभी
इश्क़ नापुख़्ता[3] अभी, जज़्बे-दरूं[4] ख़ाम[5] अभी

ख़ुद झिझकता हूं कि दावा-ए-जुनूं[6] क्या कीजै
कुछ गवारा भी है ये क़ैदे-दरो-बाम[7] अभी

ये जवानी तो अभी माइले-पैकार[8] नहीं
ये जवानी तो है रुसवाए-मय-ओ-जाम[9] अभी

वाइज़ो-शैख़ ने[10] सर जोड़ के बदनाम किया
वर्ना बदनाम न होती मय-ए-गुलफ़ाम[11] अभी

मैं ब-सद-फ़ख़्र[12] ये जुह्हाद से[13] कहता हूं 'मजाज़'
मुझको हासिल, शरफ़े - बैअ़ते - ख़य्याम[14] अभी

० ० ०

आशिक़ी जांफ़ज़ा[15] भी होती है
और सब्र-आज़मा भी होती है

रूह होती है कैफ़-पर्वर[16] भी
और दर्द - आशना भी होती है

हुस्न को कर न दे ये शर्मिन्दा
इश्क़ से ये ख़ता[17] भी होती है

---

1. दिल रूपी दामन पर 2. दैवी प्रेरणा की वर्षा 3. अपरिपक्व 4. भीतरी भावना 5. अपक्व 6. उन्माद का दावा 7. दरवाज़ों और छतों (घर) की क़ैद 8. संघर्ष की ओर प्रवृत्त 9. शराब के कारण बदनाम 10. धर्मोपदेशकों ने 11. फूलों ऐसी सुन्दर शराब 12. अत्यन्त गौरव के साथ 13. संयमियों से 14. प्रसिद्ध दर्शनिक और मद्यप ख़य्याम की शिष्यता का गौरव 15. प्राणवर्धक 16. आनंदोत्पादक 17. ग़लती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बन गई रस्म बादाख़्वारी[1] भी
ये नमाज़ अब क़ज़ा[2] भी होती है
जिसको कहते हैं नाला-ए-बरहम[3]
साज़ में वो सदा भी होती है

० ० ०

रहे-शौक़ से[2] अब हटा चाहता हूं
कशिश[6] हुस्न की देखना चाहता हूं
कोई दिल-सा दर्द-आशना चाहता हूं
रहे-इश्क़ में रहनुमा[7] चाहता हूं
तुझी से तुझे छीनना चाहता हूं
ये क्या चाहता हूं, ये क्या चाहता हूं
ख़ताओं पे[8] जो मुझको माइल[9] करे फिर
सज़ा और ऐसी सज़ा चाहता हूं
तुझे ढूंडता हूं तिरी जुस्तजू है
मज़ा है कि ख़ुद गुम हुआ चाहता हूं

० ० ०

अक़्ल की सतह से[10] कुछ और उभर जाना था
इश्क़ को मंज़िले-पस्ती से[11] गुज़र जाना था
जल्वे थे हल्क़ा-ए-हर-दामे-नज़र से[12] बाहर
मैंने हर जल्वे को पाबंदे-नज़र[13] जाना था

---

1. शराब पीना 2. समय पर न होने वाली नमाज़ 3. क्रुद्ध आर्त्तनाद 4. आवाज़ 5. इश्क़ के मार्ग से 6. आकर्षण 7. पथप्रदर्शक 8. ग़लतियों पर 9. प्रवृत्त 10. स्तर से 11. पतन की मंज़िल से 12. नज़र के जाल की हर कड़ी से 13. नज़र का पाबंद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुस्न का ग़म भी हसीं, फ़िक्र हसीं, दर्द हसीं
उनको हर रंग में हर तौर संवर जाना था

हुस्न ने शौक़ के हंगामे तो देखे थे बहुत
इश्क़ के दावा-ए-तक़्दीस से[1] डर जाना था

ये तो क्या कहिये चला था मैं कहां से हमदम[2]
मुझको ये भी न था मालूम किधर जाना था

हुस्न, और इश्क़ को दे ता'ना-ए-बेदाद[3] 'मजाज़'
तुमको तो सिर्फ़ इसी बात पे मर जाना था

o o o

परतवे-साग़रे-सहबा[4] क्या था
रात इक हश्र-सा बर्पा[5] क्या था

क्यों जवानी की मुझे याद आई
मैंने इक ख़्वाब सा देखा क्या था

हुस्न की आंख भी नमनाक[6] हुई
इश्क़ को आपने समझा क्या था

इश्क़ ने आंख झुका ली वर्ना
हुस्न और हुस्न का पर्दा क्या था

क्यों 'मजाज़' आपने साग़र[7] तोड़ा
आज ये शहर में चर्चा क्या था

o o o

---

1. पवित्रता के दावे से 2. साथी 3. अत्याचार का ताना 4. अंगूरी शराब के प्याले का प्रतिबिंब 5. प्रलय सी मची हुई 6. सजल 7. शराब का प्याला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ये जहां बारगहे-रत्ले-गिरां[1] है साक़ी
इक जहन्नुम मिरे सीने में तपां है[2] साक़ी

जिसने बर्बाद किया माइले-फ़रियाद[3] किया
वो मोहब्बत अभी इस दिल में जवां है साक़ी

एक दिन आदमो-हव्वा भी किये थे पैदा
वो उख़ुव्वत[4] तिरी महफ़िल में कहां है साक़ी

माहो-अंजुम[5] मिरे अश्कों से गुहरताब[6] हुए
कहकशां[7] नूर की इक जूए-रवां[8] है साक़ी

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त[9] भी उठती है नज़र
कितना पुरकैफ़ ये[10] मंज़र[11] ये समां है[12] साक़ी

ज़मज़मा[13] साज़ का पायल के छनाके की तरह
बेहतर-अज़ शोरिशे-नाक़ूसो-अज़ां[14] है साक़ी

मेरे हर लफ़्ज़ में बेताब मिरा सोज़े-दरूं[15]
मेरी हर सांस मोहब्बत का धुआं है साक़ी

° ° °

---

1. वहुमूल्य शराब के प्याले की राजसभा (मधुशाला) 2. जल रहा है 3. फ़रियाद करने पर विवश 4. बन्धुत्व 5. चांद, सितारे 6. आंसुओं से मोतियों ऐसे चमकदार 7. आकाश-गंगा 8. प्रकाश की बहती नदी 9. ओर 10. आनन्ददायक 11. दृश्य 12. समय 13. संगीत 14. शंख और अज़ान की आवाज़ से बेहतर 15. भीतरी जलन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तस्कीने-दिले-महज़ूं न हुई[1], वो सअ़ी-ए-करम[2] फ़र्मा भी गए
इस सअ़ी-ए-करम को क्या कहिये, बहला भी गए तड़पा भी गए

इक अर्ज़े-वफ़ा भी कर न सके, कुछ कह न सके, कुछ सुन न सके
यां हमने ज़बां ही खोली थी, वां आंख झुकी शर्मा भी गए

आशुफ़्तगी-ए-वहशत की[3] क़सम, हैरत की क़सम, हसरत की क़सम
अब आप कहें कुछ या न कहें हम राज़े-तबस्सुम[4] पा भी गए

रूदादे-ग़मे-उल्फ़त[5] उनसे हम क्या कहते, क्योंकर कहते
इक हर्फ़[6] न निकला होंठों से और आंख में आंसू आ भी गए

अर्बाबे-जुनूं पर[7] फ़ुरक़त में[8] अब क्या कहिये क्या-क्या गुज़रा
आए थे सवादे-उल्फ़त में[9] कुछ खो भी गए, कुछ पा भी गए

ये रंगे-बहारे-आलम[10] है, क्यों फ़िक्र है तुझको ऐ साक़ी
महफ़िल तो तिरी सूनी न हुई, कुछ उठ भी गए, कुछ आ भी गए

उस महफ़िले-कैफ़ो-मस्ती में, उस अंजुमने-इर्फ़ानी में[11]
सब जाम-ब-कफ़[12] बैठे ही रहे, हम पी भी गए, छलका भी गए

° ° °

---

1. दु:खित हृदय शान्त न हुआ 2. कृपा करने की कोशिश 3. उपेक्षा की खिन्नता की 4. मुस्कराहट का भेद 5. प्रेम के दुखों की कहानी 6. शब्द 7. उन्माद-ग्रस्तों (आशिक़ों) पर 8. विच्छोह में 9. प्रेम-नगरी की सीमा में 10. संसार के वसन्त की स्थिति 11. ब्रह्मज्ञानियों की सभा में 12. प्याला हाथ में लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिले-ख़ूं-गश्ता-ए-जफ़ा पे[1] कहीं
अब करम[2] भी गिरां[3] न हो जाए

तेरे बीमार का ख़ुदा हाफ़िज़
नज़्रे-चारागरां[4] न हो जाए

इश्क़ क्या-क्या न आफ़तें ढाए
हुस्न गर मेह्रबां न हो जाए

मय के[5] आगे ग़मों का कोहे-गिरां[6]
एक पल में धुआं न हो जाए

फिर 'मजाज़' इन दिनों ये ख़तरा है
दिल हलाके-बुतां[7] न हो जाए

(मरणोबरांत प्राप्त कलाम)

० ० ०

1. उपेक्षा द्वारा घायल मन पर 2. कृपा 3. बोझल, असह्य 4. उपचारकों की भेंट 5. शराब के 6. बहुत बड़ा पहाड़ 7. सुन्दरियों द्वारा हताहत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दर्द की दौलते-बेदार[1] अता[2] हो साक़ी
हम बही-ख़्वाह[3] सभी के हैं, भला हो साक़ी

सख़्तजां[4] ही नहीं हम ख़ुदसर-ओ-ख़ुद्दार[5] भी हैं
नावके-नाज़[6] ख़ता है[7] तो ख़ता हो साक़ी

सअई-ए-तद्बीर में[8] मुज़मर[9] है इक आहे-जांसोज़[10]
इस का इनआ़म सज़ा हो कि जज़ा[11] हो साक़ी

सीना-ए-शौक़ में[12] वो ज़ख़्म कि लौ दे उट्ठे
और भी तेज़ ज़माने की हवा हो साक़ी

आंधियां उट्ठी हैं, सुनसान है मयख़ाना-ए-शौक़[13]
अब तो इक सिजदा-ए-मा'सूम[14] रवा हो[15] साक़ी

(मरणोपरांत प्राप्त कलाम)

° ° °

---

1. जाग्रत् धन 2. प्रदान 3. शुभचिंतक 4. जिसके प्राण कठिनता से निकलें 5. मुंहज़ोर तथा स्वाभिमानी 6. नाज़ रूपी तीर 7. चूक गया है 8. कर्म करने के प्रयत्न में 9. निहित 10. जानलेवा आह 11. शुभ प्रतिफल 12. इश्क़ रूपी छाती में 13 इश्क़ रूपी मधुशाला 14. मासूम की प्रार्थना 15. स्वीकार हो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ चुने हुए शेर

ख़ुद को बहलाना था आख़िर ख़ुद को बहलाता रहा
मैं ब-ईं सोज़े-दरूं[1] हंसता रहा, गाता रहा
मुझ को एहसासे-फ़रेबे-रंगो-बू[2] होता रहा
मैं मगर फिर भी फ़रेबे-रंगो-बू खाता रहा

० ० ०

मेरी दुनिया-ए-वफ़ा में क्या से क्या होने लगा
इक दरीचा बंद मुझ पर एक वा होने लगा[3]
इक निगारे-नाज़ की[4] फिरने लगीं आंखें 'मजाज़'
इक बुते-काफ़िर[5] का दिल दर्द-आशना[6] होने लगा

० ० ०

मए-गुलफ़ाम[7] भी है, साज़े-इश्रत[8] भी है, साक़ी भी
मगर मुश्किल है आशोबे-हक़ीक़त से[9] गुज़र जाना

० ० ०

मैं कि बर्बादे-निगाराने-दिल आरा[10] ही सही
मैं कि रुसवाए-मयो-साग़रो-मीना[11] ही सही
मैं कि मक़तूले-गुलो-नर्गिसे-शहला[12] ही सही
फिर भी मैं ख़ाके-रहे-साहिबे-नज़रां[13] हूं दोस्त

---

1. हृदय की जलन के बावजूद 2. रंग तथा सुगन्ध के छल की अनुभूति 3. खुलने लगा 4. हाव-भाव दिखाने वाली सुन्दरी की 5. हठधर्म सुन्दरी 6. सहानुभूतिकर्ता 7. फूल जैसी सुन्दर शराब 8. सुख-संगीत 9. वास्तविकता की पीड़ा से 10. हृदयाकर्षक सुन्दरियों द्वारा बर्बाद 11. शराब के प्याले और सुराही (शराब) के कारण बदनाम 11. नर्गिस के फूल ऐसी आंखों वाली सुन्दरियों द्वारा हताहत 13. पारखियों के मार्ग (पैरों) की धूल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझे साग़र दोबारा मिल गया है
तलातुम में[1] किनारा मिल गया है
मिरी बादा-परस्ती[2] पर न जाओ
जवानी को सहारा मिल गया है

० ० ०

इश्क़ का ज़ौक़े-नज़ारा[3] मुफ़्त में बदनाम है
हुस्न ख़ुद बेताब है जलवे दिखाने के लिए

० ० ०

वादा तेरा गो वादा-ए-बातिल[4] तो नहीं है
ये बाइसे-तस्कीने-ग़मे-दिल[5] तो नहीं है
क्यों ख़ुश है कोई ख़स्ता-ओ-वामांदा-ए-तूफ़ां[6]
ये मौजे-बला है कोई साहिल तो नहीं है

० ० ०

दिल को मह्वे-ग़मे-दिलदार[7] किए बैठे हैं
रिंद[8] बनते हैं मगर ज़हर पिए बैठे हैं
चाहते हैं कि हर इक ज़र्रा शिगूफ़ा[9] बन जाए
और ख़ुद दिल ही में इक ख़ार[10] लिए बैठे हैं

० ० ०

वक़्त की सई-ए-मुसलसल[11] कारगर[12] होती गई
ज़िंदगी लहज़ा-ब-लहज़ा[13] मुख़्तसर होती गई

---

1. तूफ़ान में 2. मदिरा पान 3. देखने की चाह 4. झूठा वायदा 5. मन की अशान्ति के लिए शान्ति का साधन 6. तूफ़ान के हाथों श्रांत तथा शिथिल 7. प्रेयसी के ग़म में तल्लीन 8. मद्यप 9. कली 10. कांटा 11. निरन्तर प्रयत्न 12. सफल 13. क्षण-प्रति-क्षण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सांस के पर्दों में बजता ही रहा साज़े-हयात[1]
मौत के क़दमों की आहट तेज़तर होती गई

o o o

क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढ़ाना चाहा
आपने ख़ुद भी तो दामन न बचाना चाहा
यूं तो अफ़साना-ए-उल्फ़त[2] था अज़ल से[3] रंगी
हमने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा

o o o

किस तरफ़ जाए कहां जाए बता दो कोई
ज़ुल्फ़े-पुरख़म का[4] गिरफ़्तार निगाहों का क़तील[5]
आलमे-यास में[6] क्या चीज़ है इक साग़रे-मए[7]
दश्ते-ज़ुल्मात में[8] जिस तरह खिज़्र की क़ंदील[9]
कितनी दुश्वार है पीराने-हरम की[10] मंज़िल
इस तरफ़ फ़ितना-ए इब्लीस[11] उधर रब्बे-जलील[12]

o o o

फिर मिरीं आंख हो गई नमनाक
फिर किसी ने मिज़ाज पूछा है

o o o

कुछ तुम्हारी निगाह काफ़िर थी
कुछ मुझे भी खराब. होना था

o o o

---

1. जीवन का साज़ 2. प्रेम-कथा 3. आदिकाल से 4. पेचदार केशों का 5. मारा हुआ 6. निराशा की स्थिति में 7. शराब का प्याला 8. अंधियारों के जंगल में 9. पथप्रदर्शक की मशाल 10. मस्जिद के वयोवृद्धों की 11. शैतान का उपद्रव 12 सर्वश्रेष्ठ भगवान्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फिर किसी के सामने चश्मे-तमन्ना[1] झुक गई
शौक़ की[2] शोखी में रंगे-एहतिराम[3] आ ही गया
बारहा ऐसा हुआ है याद तक दिल में न थी
बारहा मस्ती में लब पर उनका नाम आ ही गया
ज़िंदगी के ख़ाका-ए-सादा को[4] रंगीं कर दिया
हुस्न काम आए न आए इश्क़ काम आ ही गया

० ० ०

खाइएगा इक निगाहे-लुत्फ़[5] का कब तक फ़रेब
कोई अफ़साना बना कर बदगुमां[6] हो जाइये

० ० ०

अपना ग़म औरों को दे औरों का ग़म लेने से क्या
तेरी क़श्ती पार लग जाएगी इस खेने से क्या
बात तो जब है कि मर जा अर्सा-गाहे-रज़्म में[7]
इस पे दम देने से क्या और उस पे दम देने से क्या

० ० ०

□□□

1. कामना-रूपी आंख 2. इश्क़ की 3. आदर का रंग 4. सादे रेखा-चित्र को 5. प्रेम-दृष्टि 6. मिथ्या संदेह करने वाला 7. (जीवन के) युद्ध-क्षेत्र में

मुद्रक : सोहन प्रिंटिंग सर्विस, शाहदरा, दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'उर्दू के लोकप्रिय शायर' पुस्तकमाला

हिन्दी पाठकों को उर्दू के लोकप्रिय शायरों तथा उनकी शायरी से परिचित कराने के उद्देश्य से प्रस्तुत इस पुस्तकमाला का स्वागत हुआ है। इस पुस्तकमाला की मुख्य विशेषता है कि इसमें शायर के जीवन और कृतित्व के संबंध में रोचक जानकारी के साथ उसकी लोकप्रिय ग़ज़लें, नज़्में, और शे'र सम्मिलित हैं । पाठकों की सुविधा के लिए यथास्थान दिए गए कठिन शब्दों के अर्थ भी इन पुस्तकों की उपयोगिता तथा लोकप्रियता को बढ़ावा देने में सहायक हैं । इस पुस्तकमाला के संपादक हैं, श्री प्रकाश पण्डित। निम्नलिखित शायरों पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :

ग़ालिब
इक़बाल
फ़ैज़ अहमद फ़ैज़
साहिर लुधियानवी
मजरूह सुल्तानपुरी
फ़िराक़ गोरखपुरी
जिगर मुरादाबादी
सरदार जाफ़री
मख़्दूम
जज़्बी
जांनिसार अख़्तर
अदम

मजाज़
शकील बदायूनी
अहमद नदीम कासमी
अख़्तर-उल-ईमान
जोश मलीहाबादी
हफ़ीज़ जालन्धरी
अख़्तर शीरानी
क़तील शिफ़ाई
अकबर इलाहाबादी
बहादुरशाह ज़फ़र
ज़ौक़
दाग़

राजपाल
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली